अप्रैल, 1982
वर्ष 17 ❋ अंक 10

ज्ञानामृत

मूल्य 2.00

भारत के प्रधानमंत्री इन्द्रा गांधी जी का बम्बई में स्वागत करते, उन्हें ईश्वरीय साहित्य भेंट करते तथा ईश्वरीय सन्देश सुनाते हुए गामदेवी (बम्बई) सेवा केन्द्र से ब्र० कु० हंसा बहन

कोलाबा (बम्बई) सेवा केन्द्र द्वारा रेडियो कल्ब में आयोजित महा शिवरात्रि समारोह में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० पुष्पशान्ता जी, ब्र० कु० ब्रिजइन्द्रा जी, भ्राता वी० एन० देशपांडे, मुख्य न्यायाधीश बम्बई उच्च न्यायालय, ब्र० कु० जानकी जी तथा ब्र० कु० उषा जी विराजमान हैं

शोलापुर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् भ्राता जयवंत राव तिलक, उर्जा मन्त्री महाराष्ट्र चित्रों का अवलोकन करते हुए। साथ में ब्र० कु० महानंदा जी, ब्र० कु० बाबूराव जककल सम्पादक विश्व समाचार, भ्राता कांबले गुरुजी, भूतपूर्व गृह मन्त्री महाराष्ट्र दिखाई दे रहे हैं

दीदी ब्र० कु० मनमोहिनी जी इन्दौर में महाशिवरात्रि समारोह का उद्घाटन करते हुए, उनका साथ दे रहे हैं भ्राता आनन्द मोहन माथुर, एडवोकेट जनरल म० प्र० शासन, भ्राता घनश्याम दास अग्रवाल प्रबन्धक सम्पादक "विश्व भ्रमण" दैनिक

गाजियाबाद में महाशिवरात्रि समरोह में भ्राता आर० एल० गुप्ता, अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश प्रवचन करते हुए। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० सतीश जी, ब्र० कु० हृदयमोहिनी जी तथा ब्र० कु० चक्रधारी जी

भ्राता मांगेराम जी गुप्ता, स्थानीय स्वशासन मंत्री हरियाणा, जींद में राजयोग सेवा-केन्द्र की आधारशिला रख रहे हैं। साथ में ब्र० कु० गुलजार मोहिनी जी, विजय लक्ष्मी व अन्य भाई-बहन खड़े हैं

देहरादून में योगकक्ष का उद्घाटन करने के पश्चात् समारोह में (बाएं से) ब्र० कु० हुकमचन्द जी, भ्राता नरेन्द्र कुमार जैन, स्वामी माधवाचार्य जी, ब्र० कु० प्रेमलता जी तथा ब्र० कु० नीना जी।

गामदेवी (बम्बई) सेवाकेन्द्र पर भ्राता अरुन शराफ़, निर्देशक दूरदर्शन, ब्र० कु० जानकी प्रबन्धक विदेश सेवा-केन्द्र तथा दीदी ब्र० कु० मनमोहिनी जी से मिलते हुए।

इन्दौर में "राष्ट्र विकास आध्यात्मिक सम्मेलन" में सम्बोधन करती हुई दीदी ब्र० कु० मनमोहिनी जी। अन्य वक्तागण (बांये दांये) ब्र० कु० कमला, ब्र० कु० किरण, ब्र० कु० आरती, भ्राता हिमांशु मुर्कजी, प्रबन्धक निर्देशक स्टेट बैंक ऑफ़ इन्दौर, मेजर जनरल भ्राता एस. एल. मल्होत्रा, भ्राता एन. सुन्दरम्, अध्यक्ष लोक सेवा आयोग, भ्राता राजा श्री-धरन, पुलिस उपमहानिरीक्षक एवं भ्राता पी. सी. हेम्ब्रम. निर्देशक आकाशवाणी इन्दौर

उज्जैन में शिवरात्रि के उपलक्ष्य में आयोजित "विश्व एकता आध्यात्मिक समारोह" का उद्घाटन कर रहे हैं भ्राता शरद चन्द्र बेहार, संभागायुक्त उज्जैन, दीदी ब्र० कु० मनमौहिनी जी एवं ब्र० कु० आशाजी

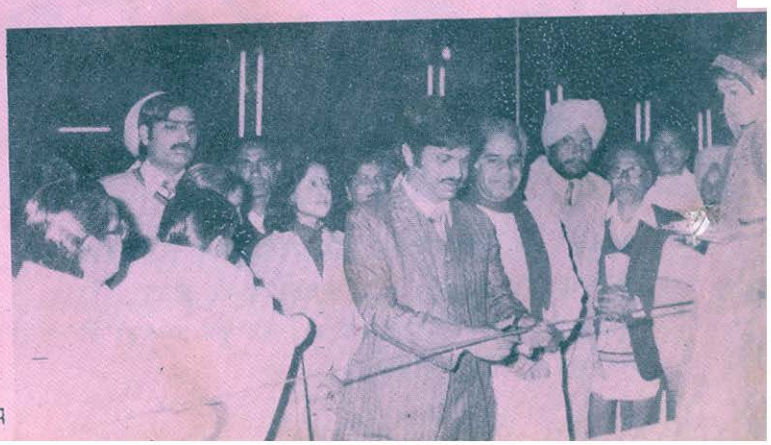

कपूरथला में आयोजित नव विश्व आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन भ्राता एस० सी० अग्रवाल, अतिरिक्त जिला न्यायाधीश कर रहे हैं। साथ में हैं ब्र० कु० राज, कृष्णा तथा अन्य

अमृत सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	पवित्रता क्या है ? (मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित)	१	१०.	सतयुग और सम्बन्ध	२१
२.	पाना था जो पा लिया, और क्या बाकी रहा ?	२	११.	अप्रैल फूल (कविता)	२४
३.	मनन-शक्ति	४	१२.	सत्कार	२५
४.	धर्म (कविता)	७	१३.	पथिक की खोज	२७
५.	एक अद्भुत सुहावनी घड़ी	८	१४.	सेवा समाचार (चित्रों में)	२९
६.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (चित्रों में)	९	१५.	पवित्रता के पथ पर	३३
७.	विकारों से छूटने की एक युक्ति	१३	१६.	गीत	३६
८.	जागो मानव (कविता)	१६	१७.	ईश्वरीय सेवा समाचार (सचित्र)	३७
९.	शिवरात्रि सेवा समाचार (सचित्र)	१७	१८.	यथार्थ महाबीर	४१
			१९.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	४२

मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित

पवित्रता क्या है ?

मनसा, वाचा कर्मणा और अशुद्धता का त्याग करना ही वास्तविक पवित्रता है। वृत्ति, दृष्टि कृति तथा प्रवृत्ति में रिंचक मात्र भी देहाभिमान स्पर्श न करे—यह ही पवित्रता की चरमसीमा है। राजयोगी पवित्रता के पथ पर अग्रसर होता है क्यों कि उसका बुद्धियोग एक पवित्रता के सागर के साथ जुटा रहता है। उसका मन आत्मस्मृति तथा प्रभ-स्मृति में रमा रहता है। वह सर्व को आत्मा देखते हुए, देह के धर्म, लिङ्ग, आयु, रंग, रूप, मान मर्तबे आदि को न देख सबको भाई-भाई की दृष्टि से देखता है। मुख द्वारा सत्य, मधुर और सर्व के लिए कल्याण के बोल ही बोलता है। प्रवृत्ति में रहते हुए सम्पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करता है। मन, वचन, कर्म, दृष्टि वृत्ति, कृति में लेशमात्र अशुद्धता न आना ही सम्पूर्ण पवित्रता है।

—:o:—

पाना था जो पा लिया, और क्या बाकी रहा ?

यह सत्यता प्रसिद्ध है कि जिस मनुष्यात्मा को ईश्वरानुभूति होती है और जो जीवन की पहेली का हल जान लेता है, उसके मुख-कमल से यह सहज रूप से स्वतः ही विनिसृत होता है कि 'पाना था जो पा लिया, और क्या बाकी रहा ?' योगारूढ़ मनुष्य के मन की इस स्थिति के कारण स्पष्ट ही हैं। पहली बात तो यह है कि परमात्मा ही तो शान्ति, आनन्द और प्रेम के सागर हैं तथा सर्वशक्तिमान् हैं। अतः उनसे मिलन हो जाने के बाद मनुष्य की भला क्या इच्छा शेष रह जाती है ? परमात्मा ही को तो 'दाता' कहा जाता है। उन्हीं के बारे में यह लोकोक्ति है कि उनके भण्डारे सदा भरपूर होते हैं और उनके प्रताप से ही काल-कंटक दूर होते हैं। अतः जब कोई उनका बनता है तो उस पर सर्व-समर्थ परमपिता की अनुकम्पा तो होती ही है।

यों भी मनुष्य सभी वरदान उस प्रभु ही से तो मांगते हैं—स्वास्थ्यवान भव, आयुष्वान भव, धनवान भव, शक्तिमान भव आदि-आदि। ये सब आशीर्वाद परमात्मा ही से तो पाना चाहते हैं। तो जिसने भगवान को अपना बना लिया अथवा जो स्वयं भगवान का बन गया, उसे भगवान के खज़ाने तो प्राप्त हो ही गये मानिये। तब उसे संसार की किसी भी वस्तु के प्राप्त करने की इच्छा भला कैसे रहेगी ?

कई बार हम इतिहास में इस प्रकार के वृत्तान्त पढ़ते हैं कि किसी मूल्यवान वस्तु को प्राप्त करने के लिए राजाओं के बीच में भी संघर्ष हुआ अथवा चालें चली गईं। कोहेनूर नाम वाले विश्व-प्रसिद्ध हीरे की दास्तान भी कुछ ऐसी ही है। इसी प्रकार एक दूसरे हीरे के बारे में भी बताया जाता है कि आन्ध्र प्रदेश में उस अति मूल्यवान हीरे को कैसे खुदाई करते समय एक फ्रांसीसी नागरिक ने अपने पास छिपा लिया और किस प्रकार कई हाथ बदलने के बाद, वह हीरा नेपोलियन के हाथ लगा और उसने उसको अपनी एक बड़ी अनमोल निधि माना। और, अपनी एक सबसे प्रिय वस्तु मानकर उसे अपनी पत्नी के मुकुट में जड़वा दिया। परन्तु, इन विनाशी हीरों की आध्यात्मिक ज्ञान रूपी हीरों के साथ, जो कि परमपिता परमात्मा योगाभिलाषी जनों को देते हैं, क्या तुलना! वे तो अविनाशी हीरे हैं और उनका मूल्य भला कौन लगा सकता है और कौन दे सकता है ? उनसे जीवन की पहेली जिस प्रकार हल हो जाती है और मनुष्य को जो अपार खुशी होती है, वह तो अन्य किसी भी प्रकार के खज़ाने से नहीं हो सकती। न उसे चोर लूट सकते हैं, न आग जला सकती है, क्योंकि वे पत्थर के नहीं, प्रकाश के हीरे हैं।

फिर, हम देखते हैं कि यदि कोई मनुष्य दलदल में धंसता जा रहा हो तो उसकी क्या स्थिति होती है। जब कोई भूल-भुलैया में मार्ग भूल गया हो तब वह कैसी उलझन में होता है ! जब कोई कड़कती हुई धूप में, तपती हुई लू में बोझ से दबता और झुलसता जा रहा हो, तो उसकी क्या दशा होती है। जब किसी प्यासे का गला पानी के अभाव में सूखता जाता है तो उसको कैसी परेशानी होती है। ऐसे ही यदि कोई मोह-माया की दलदल में धंसता जा रहा हो, अज्ञान की अंधेरी गली में गिरता-पड़ता जाता हो अथवा इस संसार की भूल-भुलैया में अपने नाम-धाम को तथा बाप-बपौती को भूल बैठा हो, विकारों की लू में झुलसता जा रहा हो तो उसकी भी कैसी स्थिति, कैसी गति होती है ! जब परमपिता परमात्मा उसको इस दलदल से निकालते हैं, भूल-भुलैया से पार करने के लिए मार्ग-दर्शक बनते हैं, उसके विकारों के ताप और संताप को हरने का आश्वासन देते हैं तो उसकी खुशी का क्या पारावार

होता होगा। इससे बढ़कर मनुष्य को और क्या चाहिए जिसे पाने की चाह उसके मन में रह जाती होगी। मनुष्य को शान्ति, मुक्ति और जीवन्मुक्ति से अधिक और किस वस्तु की अभिलाषा हो सकती है? इससे बढ़कर तो कोई इच्छा ही नहीं होती। जब इस इच्छा की पूर्ति का उपाय उपलब्ध हो जाता है तो फिर उसके लिए बाकी क्या पाना शेष रह जाता है?

मनुष्य के दुःख का सबसे बड़ा कारण किसी-न किसी प्रकार की चिन्ता है। चिन्ता चली जाए तो चेहरा ही खिल उठता है। निर्धनता भी एक प्रकार का अभिशाप ही है। स्वास्थ्य चला जाए तो भी कहते हैं कि कुछ खो गया परन्तु यदि प्राण ही चले जायें तो फिर क्या रहा! परमात्मा तो प्राणेश्वर हैं, उनके होने से ही जीवन में बसन्त होती है, आत्मा के लिए बहार होती है। वह मिल जायें तो सब खज़ानों की चाबी हाथ लग जाती है।

इन सभी कारणों से कहा गया है कि योगी के मन में न कोई तृष्णा होती है न इच्छा बल्कि 'इच्छा मात्रम् अविद्या' की उक्ति के अनुसार वह 'आप्त-काम' स्थिति वाला होता है अर्थात जैसे सब इच्छायें एवं कामनायें पूर्ण हो जाने से किसी का मन स्थाई रूप से सन्तुष्ट हो गया हो वैसे ही वह तृप्त अनुभव करता है। वह ग्रीष्म ऋतु में प्यासे हरिण की न्याई चमकने वाली रेत की ओर नहीं भागता। पानी से निकाली गई मछली के समान वह तड़पता एवं हांपता नहीं। जिसे चारा, पानी न मिला हो ऐसी गाय के समान वह अपनी स्थिति का खूंटा नहीं तोड़ता। जिस कर्मचारी ने वेतन न पाया हो, उसके समान पीड़ित अनुभव करके हड़ताल नहीं करता। जिस बच्चे की कोई प्रिय चीज़ हाथ से छूटकर टूट गई हो, उसके समान वह नहीं रोता बल्कि वह एक-रस, स्थिर, अचल, निश्चिन्त, शान्त, मधुर एवं प्रिय बना रहता है।

परन्तु योगी के मार्ग में भी अनेक प्रकार के विघ्न, कई प्रकार की परीक्षायें, और विभिन्न प्रकार के प्रलोभन आते है। जब प्रकृति उसकी दासी होने लगती है, तब उसे बहुत सतर्क रहने की आवश्यकता होती है। तब यदि वह अपने किसी भी नियम को छोड़ता है और किसी सांसारिक प्राप्ति की ओर झुक जाता है, तब वह अपने बहुत बड़े सौभाग्य को गंवा बैठता है। ऐसे लोगों के लिए ईश्वरानुभूति का मार्ग फिसलने वाला मार्ग है जिस पर यदि एक कदम भी फिसल गया तो चोट ऐसी कड़ी लगती है कि फिर मनुष्य को उठने में समय लगता है और उसकी यात्रा अधूरी-सी रह जाती है।

इन्हीं अनेक प्रकार की परीक्षाओं में से जो एक प्रकार का विघ्न मनुष्य के सामने आ उपस्थित होता है, वह है—मान और शान की इच्छा। जब मनुष्य योग की स्थिति में ऊँचा उठता है तो लोग उससे प्रभावित होकर उसकी 'वाह-वाह' करने लगते हैं। यदि योगी उसे सुनते हुए अनसुना करके आगे बढ़ता जाता है तब तो वह एक दिन अपने गन्तव्य तक पहुंच जाता है, वरना यह 'वाह-वाह' उसके लिए फिसलन अथवा दल-दल की तरह सिद्ध होती है। इससे उसका जाता हुआ अभिमान फिर लौट आता है, उसकी संतुष्टता उससे मुख मोड़ लेती है और अभि-मान के साथी—क्रोध, निन्दा, घृणा आदि भी—वापस लौटने की ताक लगाये रहते हैं। अब वह प्रभुकी महिमा का श्रेष्ठ कर्त्तव्य करने की बजाय अपनी महिमा सुनने में दिलचस्पी लेने लगता है, यदि कोई उसकी महिमा नहीं करता, तो उसके प्रति शंकित हो उठता है। जो उसका प्रशंसक हो, उसकी ओर अधिक झुक जाता है और उसकी बातें सुनने तथा मानने में उसका मन कोमल हो जाता है और इस प्रकार के बखेड़े में पड़-कर योग की ऊंची उड़ान से धरती पर ऐसे आकर धराशायी होता है जैसे कि कोई वायुयान अपने इंजन के किसी कल-पुर्ज़े के कारण दुर्घटना-ग्रस्त होता है। अतः योगी को चाहिए कि वह अपने इस मार्ग की खाइयों की ओर सचेत रहे। और मिश्री-मेवा, मोटर-मकान, स्वागत-सुश्रुषा, उपहार और आराम तथा प्रशंसा और पुष्प वर्षा में निश्चेष्ट और एक रस रहते हुए, योग के परमानन्द में रमा रहे।

जगदीश

मनन-शक्ति

ब्र० कु० सूरज कुमार, मधुबन, आबू

आत्मिक शक्ति बढ़ाने वाली औषधि है—'मनन शक्ति'। मनन-शक्ति अनुभवों की जननी और सर्व खज़ाने खोलने की चाबी है। मनन विहीन आत्मा अनेक बार स्वयं को खाली-खाली सा महसूस करती है। भगवान भी मिल गये, उसके द्वारा सम्पूर्ण ज्ञान भी मिल गया, और सर्व खज़ानों की चाबी भी। फिर भी जीवन में निराशा व उदासी, अकेलापन व खालीपन, व्यर्थ का तूफ़ान और स्थिति का ज्वार भाटा क्यों? कारण है मनन-शक्ति की कमी।

हम क्या करें जो मनन हमारे पास एक शक्ति के रूप में जमा हो जाए। मनन से, बाबा के ज्ञान पर हमारा सम्पूर्ण अधिकार हो जाता है। हर बात हमारा अनुभव बन जाती है और हमारे जीवन में रूहाब भर जाता है। देखने वाले हमें विचारक व महान-आत्मा अनुभव करने लगते हैं।

तो आओ आज से हम अपनी दिनचर्या के केवल १५ मिनट इस महान शक्ति की प्राप्ति में लगायें। हम मनन का अभ्यास करें। परन्तु इसका सरल तरीका—"कुछ लिखना" है। अन्यथा पुरुषार्थी एकान्त में मनन करने में सफल नहीं हो पाते क्योंकि कुछ ही समय में मन का प्रवाह, किसी प्रभाव के अधीन होकर लक्ष्य से विचलित हो जाता है। अतः मनन का सरलतम उपाय है—'कुछ लिखना'। लिखने से मन शीघ्र ही एकाग्र हो जाता है। तो रोज़ हम किसी विषय पर एक पेज लिखें। या दूसरा तरीका है—हम मुरली पढ़ें और उसका क्या सार मन पर प्रभाव डाल गया, उसे लिखें तो हमारी मनन शक्ति द्रुत गति से बढ़ेगी। और फिर हम इस ईश्वरीय जीवन में एक विशेष आनन्द के अधिकारी होंगे। वह है—बाबा से दिव्य प्रेरणाएं प्राप्त करना।

इस प्रकार प्रतिदिन मनन करते रहने से हम किसी भी विषय पर कुछ लिख देने की क्षमता प्राप्त कर लेंगे। और फिर आयेगी हमारे जीवन की वे सुनहरी घड़ियां जब एकान्त में जाते ही शिव बाबा से हमें नई-नई व दिव्य प्रेरणाएँ प्राप्त होने लगेंगी। तब हम इस ईश्वरीय जीवन का सर्वश्रेष्ठ आनन्द लेंगे जिसके बाद हमें योग लगाने की या बुद्धि को एकाग्र करने की मेहनत नहीं होगी, बल्कि योग लगा ही हुआ है—ऐसी मग्न स्थिति अनुभव होगी।

ऐसे ही कुछ दिव्य अनुभव मुझे २ वर्ष से हो रहे हैं जो कि एकान्त में जाते ही बाबा की अनुपम प्रेरणाएं मन को आनन्दित करने लगती हैं। नये-नये विचार आत्मा को बलवान बनाने लगते हैं। वे घड़ियां इस अलौकिक जीवन की अनमोल घड़ियां होती हैं, जब यह अनुभव होता है कि अव्यक्त वतन में अव्यक्त बाप-दादा से कितनी श्रेष्ठ प्रेरणाएं प्राप्त हो रही हैं। मुझे कुछ भी लिखने की प्रेरणा भी इसी तरह प्राप्त होती है। यह अनुभव योग को बहुत ही रसीला बना देता है। और मन में बाप-दादा के प्रति बहुत ही प्यार उमड़ने लगता है।

मनन करना गलत नहीं

बहुत पुरुषार्थी ज्ञान मनन को महत्त्व नहीं देते। वे सोचते हैं कि योग से ही सर्व प्राप्ति होगी। ऐसी ही विचारधारा १०-१२ वर्ष पूर्व मेरी भी थी। तब १९७१ में अव्यक्त बाप-दादा ने मुझे ज्ञान मनन करने की प्रेरणा दी। क्योंकि तब मैं केवल योग-

युक्त रहने का ही अभ्यास करता था। मनन नाम-मात्र ही था।

बाबा ने पूछा—

'जितना योग का चार्ट है, उतना ही मनन का भी चार्ट है?'

मैंने उत्तर दिया—नहीं।

तब बाबा ने कहा—'ज्ञान मनन भी किया करो...'

मैंने पूछा—'जबकि सम्पूर्ण योग ही सम्पूर्णता है, तब ज्ञान-मनन की क्या आवश्यकता है? क्यों न योग को ही निरन्तर किया जाए।'

बाबा ने मनन का महत्त्व बताते हुए कहा—

'यह तो ठीक है, परन्तु आगे चलकर जब योग में विघ्न आयेंगे तो योग टूट जाएगा और अगर मनन-शक्ति नहीं होगी तो पुनः योग को एक रस नहीं बना पायेंगे। विघ्नों को मनन-शक्ति द्वारा ही हटाया जा सकता है। मनन शक्ति हर जगह सफ़लता प्राप्त करायेगी।'

पुनः बाबा ने कहा था—

'फुल पास होना अर्थात् चारों सब्जेक्ट में फुल पास। अगर योग में फुल पास हुए और ज्ञान में नहीं तो फुल पास नहीं हो सकोगे। इसलिए आज से ज्ञान-मनन भी किया करो।'

और ये बाबा के बोल मेरे लिए वरदानी बन गये। और मनन मेरा स्वाभाविक गुण बन गया। तब योग के साथ-साथ मनन भी होने लगा और जीवन में विभिन्न अलौकिक अनुभव हुए।

मुझे याद आया कि साकार में बाबा रोज सवेरे-सवेरे ज्ञान मनन भी किया करते थे। अगर कोई बच्चा कुछ काम से आता था तो बाबा कहा करते थे—"बाबा बच्चों के लिए ताजा भोजन बना रहा है, अभी बात नहीं करो।"

इसलिए किसी भी पुरुषार्थी को जीवन में मनन को पूर्ण महत्त्व देना चाहिए। 'ज्ञान' हमारा एक विषय है। और मनन हमें ज्ञान स्वरूप बनाता है और तत्पश्चात् हम योग-युक्त व धारणा-स्वरूप सहज ही बन सकते हैं।

इस बार ८-११-८१ की अव्यक्त मुरली में चारों विषयों के चार रंग स्पष्ट करते हुए दिखाया कि ज्ञान का सुनहरा रंग, शेष सभी विषयों के रंग में मिला हुआ था। अर्थात् शेष ३ विषय भी ज्ञान पर ही आधारित हैं। ज्ञान का मनन ही आत्मा को योग-मग्न करता है। और ज्ञान की गहराई ही पवित्रता व सर्व दैवी गुणों को सम्पन्न करती है। और ज्ञान की बरसात से ही सेवा में हरियाली छाती है। अतः जितना ध्यान हम अन्य विषयों पर देते हैं, उससे भी अधिक ध्यान हम ज्ञान-मनन-शक्ति को बढ़ाने पर दें।

ज्ञान-मनन के लाभ

ज्ञान-मनन के कुछ अनुभव-युक्त लाभ इस प्रकार हैं :—

* सर्वप्रथम मनन एक शक्ति है। इससे आत्मा स्वयं को बहुत ही शक्तिशाली अनुभव करती है। उसे अपनी शक्तियों का, अपने स्वमान का भान होता है। फलस्वरूप जीवन से हीन-भावना समाप्त हो जाती है और हम स्वयं को महान-आत्मा अनुभव करते हैं। किसी के भी व्यक्तित्व को वा पद को देखकर जीवन में हीन-भावना का जन्म नहीं होता। हम ही महान हैं, हमें सर्व प्राप्तियां हैं, इस स्मृति से बुद्धि का सर्वत्र का खिंचाव समाप्त हो जाता है।

* दूसरी बात—जीवन में आत्मविश्वास जागृत होता है। "मैं नहीं कर सकूंगा", "क्या मैं जीवन में कुछ कर सकूंगा", "यह कार्य मुझसे नहीं होगा"—ये कमज़ोरियां समाप्त होती जाती हैं। मैंने अनेक बार यह कार्य किया है, मेरे साथ स्वयं भगवान है, मैं अवश्य सफ़ल हूंगा, ऐसा हर असम्भव कार्य करने का साहस व विश्वास प्राप्त होता है। अतः जिन पुरुषार्थियों में आत्म-विश्वास की कमी है, वे मनन-शक्ति बढ़ावें।

*तीसरा—जीवन में ईश्वरीय खुशी व नशा ज्ञान-मनन से ही प्राप्त होता है। और खुशी व नशे में रहने वाली आत्मा विघ्नों को वैसे ही उड़ा देती है, जैसे

रुई को फूंक मार कर उड़ाया जाता है। तब हमें हमारा जीवन विघ्न मुक्त लगता है और तब ही हमें यह आभास होता है कि हमारा ये जीवन ८४ जन्मों में सबसे महान है।

*चौथा—व्यर्थ संकल्प व उसकी रचना—उदासी, निराशा व थकावट आदि, जिनके लिए पुरुषार्थी मेहनत कर-करके थक जाते हैं, मनन से स्वत: ही समाप्त हो जाते हैं। मन में ऊंचे विचारों का आनन्द प्राप्त होने लगता है। और जीवन की सबसे बड़ी समस्या "व्यर्थ" से बच जाते हैं। मन सदा स्वयं को भरपूर महसूस करने लगता है। मैंने सब कुछ पा लिया—इस प्रकार सन्तुष्टता का खजाना, ये श्रेष्ठ प्राप्ति आत्मा को होती है।

* पांचवा—मनन हमें ज्ञान सागर की गहराई में ले जाता है। जहां तूफ़ान नहीं होते, शान्त होता है जहां अथाह खज़ाने का आनन्द प्राप्त होता है। ज्ञान की ये गहराई हमारे सर्व आकर्षणों को समाप्त कर देती है। और आत्मा स्वयं में ही आनन्दित होती रहती है। फलस्वरूप हमारी पवित्रता को बहुत बल प्राप्त होता है। और जीवन के हर क्षेत्र में हम सन्तुलन कर पाने में सहज सफल होते हैं।

* छटा—मनन द्वारा प्राप्त ज्ञान-रत्नों का हमें सेवा में लाभ होता है। मनन करने से हमें ज्ञान की अथार्टी महसूस होती है। और हम किसी बड़े से बड़े विद्वान को भी ज्ञान से सहमत कर लेते हैं। हमें ये नहीं लगता कि ये तो शास्त्रों के विद्वान हैं। बल्कि हमारे ज्ञान-युक्त अनुभवों के आगे वे स्वयं को खाली पाते हैं।

* सातवां—अनेक विघ्नों को जन्म देने वाला हद का दृष्टिकोण या सीमित विचारधारा, मनन से समाप्त हो जाती है और हमारा दृष्टिकोण इतना विशाल हो जाता है जो मान, शान या मान-अपमान या बड़े-छोटे की बातें हमें बहुत छोटी लगती हैं।

* आठवां—और तब हमें प्रतिदिन मुरली सुनने में बहुत ही अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है। इसी के साथ-साथ मनन से हमारे चेहरे पर रुहाब छाया रहता है, देखने वाले हमें महान समझते हैं। अत: इसे योग से भिन्न नहीं समझना चाहिए, इसे ब्राह्मण जीवन का मुख्य पहलू समझ कर, इसे अपने जीवन का अभिन्न अंग बना देना चाहिए।

मनन का एक संक्षिप्त उदाहरण

आओ हम अपनी सम्पूर्ण स्थिति पर मनन करें··· प्रकट करो कि मेरे ही सामने मेरा सम्पूर्ण स्वरूप उपस्थित है। कैसा होगा वह सम्पूर्ण स्वरूप·····

* जिसमें मैं स्वयं को बहुत लाइट महसूस करूंगा।
* मेरा शरीर भी फरिश्ते समान लाइट का अनुभव होगा।
* हर कर्मेन्द्री शीतल होगी, अंग-अंग सुगन्धित होगा···
* सर्व गुण व सर्व शक्ति समाई होगी···
* मैं यहां नहीं, सदा वतन में बाबा के पास हूंगा।
* मैं तब सम्पूर्ण पवित्र हूंगा···

कितनी सुन्दर व आकर्षक होगी, मेरी वह सम्पूर्ण स्थिति! मानो कलियुग की अन्धियारी रात में सूर्य उदय हुआ हो। तब सभी का ध्यान मेरी ओर बरबस खिचा चला जाएगा और मैं बाबा की प्रत्यक्षता के निमित्त बन जाऊंगा। वह स्थिति पूरे कल्प की सबसे महान स्थिति होगी। इसका आनन्द अवर्णनीय परम आनन्द होगा। मैं तब सम्पूर्ण सिद्धि स्वरूप हूँगा। भक्तों की कामनाएं पूर्ण होगी, भक्त मुझे इष्ट रूप में स्वीकार करेंगे। आदि-आदि···

इस प्रकार मनन करते-करते सहज ही हम सम्पूर्ण स्थिति का अनुभव करने लगेंगे।

□□

धर्म

—ब्र० कु० कृष्णा चौधरी, लखनऊ

आज समस्त विश्व भूला कि धर्म क्या है ?
आज समस्त विश्व भूला कि कर्म क्या है ?
इसीलिए ही हुआ है अब भेद उसमें।
और समता का नहीं अब लेश उसमें ।।

आज अपना वेश उसने क्या बनाया ?
धर्म का कर त्याग, धरा पर पाप लाया ।
पाखण्ड में ही आज वह है शान्ति पाता ।
धर्म से ही तोड़ बैठा आज वह है पूर्ण नाता ।।

परन्तु करता है बड़ाई धर्म की हो ।
विष भरा है हृदय में, पर जुबाँ पर बात मीठी ।।
दूसरों में अवगुणों को ही है वह देखता ।
किन्तु अपने में गुणों को ही है वह लेखता ।।

सुनो, भाई आज तुम्हारा धर्म क्या है,
सुनो, भाई आज तुम्हारा कर्म क्या है ?
भूलो, तुम अब हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई।
बनो आज तुम मानवता के भाई-भाई ।।

पक्षपात क्यों भरा हुआ है तेरे मन में ?
फर्क नहीं अब मंदिर मस्जिद गिरजाघर में ।
अगर तुम्हारा मन मन्दिर के आगे झुकता ।
तो शिवबाबा के घर आने में है क्यों रुकता ?

अगर आरती करने जाते मंदिर जाकर ।
क्यों कतराते हो जाने से शिवबाबा के घर ?
अगर कीर्तन करते हो तुम हृदय खोल कर ।
तो क्यों सुनना नहीं चाहते ज्ञान मुरली के स्वर ?

गीता ज्ञान सुना रहे हैं, शिवबाबा अब संगम में ।
गीता का युग है, अब भाग्य जगा लो इस जन्म में ।।
बदलो अब अपने जीवन को, अवगुणों को मिटाओ तुम।
पावन बनकर घर चलना है, दिव्य गुणों से सज जाओ तुम ।।

एक अद्भुत सुहावनी घड़ी

ब्र० कु० सुशीला, हिंगणघाट

यें वृत्तान्त १९७५ साल का है। मुझे ज्ञान में चलते लगभग एक वर्ष हुआ होगा। मीठे बाबा का मीठा मधुबन भी देखकर आई थी। प्यारे बाबा प्रति अटूट स्नेह था, विश्वास भी था।

हम क्लास के भाई-बहिनों सहित हर रविवार को किसी-न-किसी ग्राम में जाकर मन्दिर या हॉल में चित्र (प्रदर्शनी के कैलेन्डर्स लगाकर) किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति के हाथों उद्घाटन करा सभी को संदेश देते थे। उसकी सूचना पहले से ही दी होती थी।

एक दिन की बात है—पुलगांव में विट्ठल रूखमिनी मन्दिर में प्रोग्राम लेने का निश्चित हुआ। जिस दिन प्रोग्राम था, उस दिन ही पता पड़ा कि जो बहन भाषण करने वाली थी उसका गला बैठ गया और बुखार भी आ गया। अब क्या करें! जाने का सब इन्तजाम तो हो ही गया था। जाना या नहीं जाना इसी सोच-विचार में हम सभी भाई-बहन पुलगांव पहुंचे। मन्दिर बहुत बड़ा था। चित्र एक खम्बे पर टांग दिये, छोटी-सी संदली बनाई, लाउडस्पीकर लगाया और मन्दिर के जो प्रमुख ट्रस्टी थे उन्हों के हाथों उद्घाटन हुआ, प्रदर्शनी चालू हो गयी।

दोपहर में ३ बजे प्रवचन था। जैसे-जैसे प्रवचन का समय नज़दीक आता वैसे-वैसे मेरे हृदय की धड़कन बढ़ने लगी। क्या करें? प्रवचन कौन करेगा? तू-तू-मैं-मैं चलने लगी। सभी घबरा गये। किसी को भी भाषण करना नहीं आता था। मेरे घर का पुराना वातावरण होने के कारण किसी के सम्मुख बोलने की मुझे आदत नहीं थी। २ बजे से ही मंदिर भरने लगा। भजन-मंडली, भक्त-मंडली, महिला मंडल सब आकर बैठ गये। ३ बजे तो सारा मंदिर खचाखच भर गया। बाद में एक बहन राजी होकर संदली पर योग कराने बैठ गयी। लेकिन उसने मुझे शिवबाबा का परिचय देने का वायदा करके ही जाकर बैठी थी। १५ मिनट योग कराया, वह झट उठकर चली आयी। फिर मैं जाकर बैठी। बैठते ही धड़कन जो थोड़ी-थोड़ी थी वह पूरे रूप से बढ़ गयी। मैं किस लिये बैठी हूँ यह भी भूल गयी। फिर क्या किया होगा? मैंने बाबा को इतना ज़ोर से याद किया कि पहिला "बा" शब्द साकार में तो दूसरा "बा" शब्द बाबा के पास वतन में पहुँच गया था। आँखें बंद थीं। आँखें खोली तो क्या आश्चर्य, प्यारा बाबा अपने साकार रूप में मंदिर का जो गाभारा होता है और वहाँ लकड़ी का कठडा होता है उस पर हाथ रखकर खड़े थे, मैं देख रही थी, भाषण शुरू हुआ। 1½ घंटा तक क्या बोलती रही वह तो बाबा ही जाने और वहाँ के श्रोतागण जानें। बीच में एक भक्त ने गीता का एक श्लोक पूछा। उसके तरफ नज़र जाते ही बाबा गुप्त हो गये। बाद में थोड़े प्रश्न उत्तर हुए, कार्यक्रम खतम हुआ। यही थी वह सुहावनी घड़ी, जो मुझ आत्मा पर अमिट छाप छोड़ गयी। जब भी कभी यह सुहावनी घड़ी याद आती है, तो मेरा मन उभर जाता है। मन में विचार आता है कि बाबा कैसे बच्चों का साथी बनकर सहायता करता है। बच्चों को उत्साह उमंग में लाता है और आगे बढ़ाता है। यह था एक बल एक भरोसा।

अमृतसर में विश्व कल्याण महोत्सव का उद्घाटन करती हुई दीदी मनमोहिनी जी. भ्राता सरदार सिंह जी डिप्टी कमिश्नर, ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनें

जयपुर में आयोजित शिव जयन्ती महोत्सव में मुख्य अतिथि जस्टिस गुमानमल लोढ़ा अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं

अमृतसर में विश्व कल्याण महोत्सव के उद्घाटन समारोह में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी, श्रीमती सरदार सिंह जी, भ्राता सरदार सिंह डिप्टी कमिश्नर, दीदी जी तथा ब्र० कु० चन्द्रमणि जी

ब्र० कु० भावना की विदेश यात्रा के संदर्भ में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति पाटन की ओर से आयोजित शुभ कामना स्नेह मिलन में नगर पालिका के प्रमुख भ्राता नरेन्द्र गांधी स्वागत प्रवचन करते हुए। (बाएं से) ब्र० कु० सरला, जिला शिक्षाधिकारी भ्राता मुकुन्द जोशी तथा ब्र० कु० रावल भाई दिखाई दे रहे हैं

कुरुक्षेत्र में शिवरात्री के महोत्सव पर "शिव का अवतरण कैसे ?" पर ब्र० कु० राज प्रवचन करते हुए

मुजफ्फरनगर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक मेला को देखने के लिए भ्राता विद्या भूषण जी, मंत्री उत्तर प्रदेश पधारे थे, चित्र में ब्र० कु० पुष्पा जी चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

ब्रह्मपुर (उड़ीसा) सेवा केन्द्र पर दीदी मनमोहिनी जी के पधारने पर फूलों द्वारा स्वागत करते हुए भाई-बहन दिखाई दे रहे हैं। साथ में ब्र० कु० नीलम जी खड़ी हैं

ब्र० कु० जनक बहन जी सोनीपत के जेल सुप्रिन्टेण्डैन्ट को शिवरात्री के अवसर पर ब्रह्मचर्य पालन का व्रत लेने हेतु राखी बांध रही हैं

इन्दौर सेवा केन्द्र द्वारा इन्दौर में 'स्मृति भवन' का निर्माण किया जा रहा है। चित्र में ब्र० कु० मनमोहिनी "दीदी जी" भवन का शिलान्यास करते हुए दिखाई दे रही हैं साथ में ब्र० कु० ओम प्रकाश भी दिखाई दे रहे हैं

अमरेली में आयोजित विश्व शान्ति आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन गुजरात के वित्त व आयोजन विभाग के राज्य मंत्री भ्राता हरिहर भाई कर रहे हैं साथ में दादी प्रकाशमणि जी भी उपस्थित हैं

सांपला में आध्यात्मिक सम्मेलन के पश्चात चित्र में कांग्रेस प्रेसीडेन्ट मेहर चन्द काजला, ब्र० कु० हृदय मोहिनी, ब्र० कु० चक्रधारी व अन्य बहन-भाई दिखाई दे रहे हैं

सिरसी के शिवजयन्ती महोत्सव उद्घाटन का दृश्य (बाएं से) ब्र० कु० गायत्री जी, बहन सुशीला जी, बहन अनुसैया शर्मा (विधायक), बहन राधा सोदे जी

अम्बाला में नया सेवा केन्द्र के उद्घाटन के अवसर पर मंच पर ब्र० कु० कृष्णा, ब्र० कु० आशा, मुख्य अतिथि उमा बहन व ब्र० कु० जानकी जी बैठी हैं

कटनी (म. प्र.) सेवा केन्द्र की ओर से शहडोल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी जिसका अवलोकन करते हुए वहाँ के जिला न्यायाधीश भ्राता के. सी. पारे तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति दिखाई दे रहे हैं। ब्र० कु० सुशीला बहन की व्याख्या दे रही हैं

फरीदकोट के सेशन जज भ्राता पी. सी. सिंगल अपनी पत्नी सहित संग्रहालय देखने आये। ब्र० कु० प्रेम उन्हें संग्रहालय दिखा रही हैं। साथ में ब्र० कु० संगीता खड़ी हैं

मेरठ सेवा केन्द्र पर शिवध्वजारोहण ब्र० कु० कमल सुन्दर जी ने किया

सम्बलपुर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी के अवसर पर प्रेस कान्फ्रेन्स में उपस्थित भाई व बहने बैठी हैं

पुरी सेवा केन्द्र पर शिवध्वजारोहण जगन्नाथ पुरी के कलेक्टर भ्राता अशोक कुमार मिश्रा जी ने किया। झंडे के पास ब्र० कु० निरूपमा, ब्र० कु० प्रतिभा व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

धरान में शिव जयन्ती समारोह के अवसर पर झंडा लहराने के बाद सभी भाई-बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं

सोलापुर सेवा केन्द्र में शिवरात्रि के अवसर पर 'शिव बाबा' का झंडा लहराने के पश्चात् भ्राता धर्मण्ण सादूल चेयर मैन औद्योगिक बैंक सोलापुर अपने विचार प्रगट कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० महानन्दा, ब्र० कु० सोम प्रभा व शहर के मुख्य व्यापारी, प्रतिष्ठित व्यक्ति दिखाई दे रहे है

नई दिल्ली मालवीय नगर सेवा केन्द्र की ओर से शिवरात्री महोत्सव मनाया गया। मंच पर ब्र० कु० आशा, ब्र० कु० सुन्दरी जी दिखाई दे रही हैं। इस अवसर पर डाक्टर, इन्जिनियर, एयर फोर्स के अधिकारी इत्यादि काफी मात्रा में उपस्थित थे

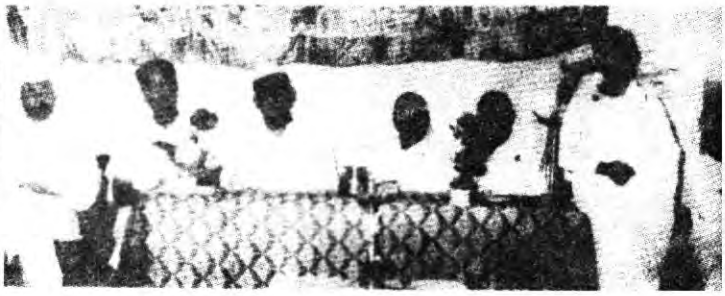

बेलगाम सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित 'शिवरात्री' महोत्सव में ब्र० कु० प्रभा परमात्मा के अवतरण पर प्रकाश डाल रही हैं, साथ में भ्राता महादेवप्पा कित्तूर जी, बी. बी. बेल्लद तथा शिवाजीराव काकत्तर बैठे हैं

भीलवाड़ा में आध्यात्मिक सम्मेलन में मंच पर ब्र० कु० सुरेन्द्र, भगवान दास जी, भ्राता मदन लाल जी, ब्र० कु० आरती जी, शिक्षा अधिकारी जैन, ब्र० कु० निर्मला, शिव कुमार, भ्राता धनपत लाल बोहरा इत्यादि बैठे हैं

दिल्ली साऊथ में एक धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गय
अन्य धर्मों के वक्तागण उपस्थित थे । उन्होंने अपने विच
रखे । मंच पर सभी धर्मों के प्रतिनिधि बैठे हैं

जूनागढ़ शिव जयन्ती महोत्सव के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में गिरनार साधना आश्रम के महाराज अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। पास में ब्र० कु० दमयन्ती, ब्र० कु० सरस्वती, ब्र० कु० कोकिला बहन बैठी हैं

गामदेवी-बम्बई सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में अतिथि भ्राता चुन्नीलाल जी मेहता पधारे थे । ब्र० कु० हंसा बहन उनको शिव बाबा का परिचय दे रही है ।

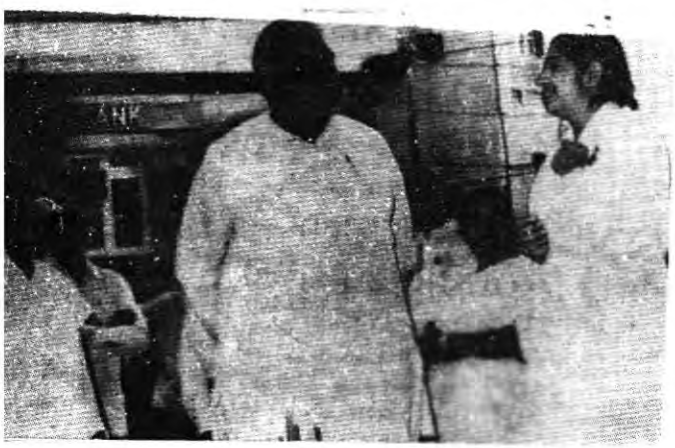

होशियारपुर सेवा केन्द्र पर शिवरात्री पर्व के लपलक्ष्य में ध्वजारोहण के पश्चात डा. गोयल जी को ब्र० कु० हरबंस चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

बिलासपुर में शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर शिवबाबा का परिचय देती हुई ब्र० कु० कुसम बहन । मंच पर बैठें हैं मुख्य अतिथि भ्राता बी. आर. यादव, कृषि राज्यमन्त्री म० प्र०, भ्राता डा० आर. पी. तिवारी, ब्र० कु० गीता, भ्राता बी. जे. वराडपांडे चीफ़ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट तथा ब्र० कु० भावना

मेरठ में शिवरात्रि समारोह में मेरठ के प्रसिद्ध वकील भ्राता गजराज सिंह जी अपने भाव प्रकट करते हुए । मंच पर (बांये से) ब्र० कु० कमलेश, ब्र० कु० विनोद, भ्राता हरिदत्त सिंह जी, बहन गायत्री मोर्दा जी, ब्र० कु० कमल सुन्दरी जी तथा ब्र० कु० मंजू जी बैठी हैं

त्रिमूर्ति शिव जयन्ति के उपलक्ष्य में कलकत्ता राय-बगान सेवा केन्द्र पर ध्वजारोहण करती हुई ब्र० कु० सन्तरी बहन । अन्य ब्र० कु० भाई बहन खड़े हैं

बोकारो लायन्स क्लब में शिवजयन्ती के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन पब्लिक रिलेशन आफीसर भ्राता ओ. एन. पंचालर तथा भ्राता एम. पी. जयसवाल, एस. डी. ओ. कर रहे हैं । साथ में खड़ी हैं ब्र० कु० कुसुम, अर्चना जी, अंजू जी तथा सुमन जी ।

महू 'सर्वधर्म सम्मेलन' में बाये से दायें भ्राता के. सी. लाड, ब्र० कु० मोहिनी जी, श्रीमती ब्रिगेडिर वी. के. पशरीचा, ब्रिगेडियर वी. के. पशरीचा, हरबंससिंह छाबड़ा, ब्र० कु० किरण बैठी हैं

जतनी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता इकबाल जी (D. R. M. S. E. Rly) कर रहे हैं। ब्र० कु० कमलेश जी व भ्राता पटनायक जी (A. D. R. M.) साथ में खड़े हैं

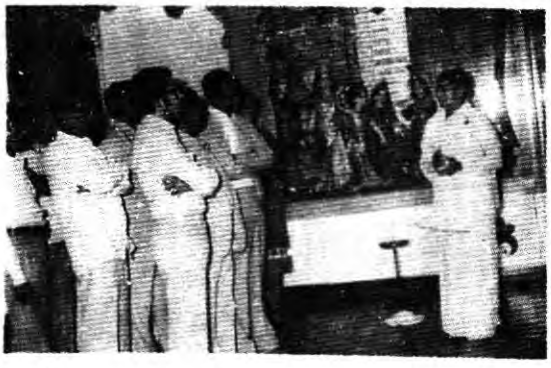

पोरबन्दर आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के लिए पधारे थे जी. ई. बोर्ड के मेम्बर भ्राता ज्योति बसु तथा उनके साथ सौराष्ट्र के चार सुप्रसिद्ध इन्जिनीषर्स भी थे। ब्र० कु० रक्षा बहन स्वर्ग के माडल पर समझा रही है

वारगंल सेवा केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक कार्यक्रम में डा. लक्षमन मूर्ति अपने अनुभव सुना रहे हैं, मंच पर भ्राता रमन जी, भ्राता राव जी, भ्राता अब्दुल खादार जी, ब्र० कु० सविता जी व अन्य भाई बैठे हैं

गोदिया में प्रदर्शनी का उद्घान दीप जलाकर बहन कुमुद पटेल, इन्दु बहन पटेल कर रही हैं। पास में खड़ हुए हैं सुरेश जी, मजिस्ट्रेट भ्राता बागड़े जी तथा ब्र० कु० मन्जू जी.

गोहाटी विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर जैमिनी मोहन चौधरी अपने विचार लिख रहे हैं, साथ में ब्र० कु० शीला, ब्र० कु० बीना, सदानन्द, शिव प्रसाद एवं सर्व कमेटी के सदस्य खड़े हैं

ीपड़ सेवा केन्द्र पर शिवध्वजारोहण हुआ। सभी बहन-भाई झंडे के नीचे शुभ संकल्प ले रहे हैं

रांची में शिवध्वजारोहण भ्राता बैनीगोपाल मिश्रा जी भूतपूर्व विधायक एवं प्राध्यापक ने किया। साथ में ब्र० कु० आर मोहन, ब्र० कु० निर्मला तथा अन्य भाई बहन बाबा की याद में खड़ हैं

क सेवा केन्द्र पर शिवरात्री के शुभ महोत्सव पर शिव ा का झंडा लहराया गया। चित्र में भ्राता रणजीत नती प्रेसीडेन्ट बार एट-ला व ब्र० कु० कमलेश जी तथा क्लास के अन्य भाई-बहन दिखाई दे रहे हैं

यह चित्र त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर बड़ोदा में निकाली गई शोभा यात्रा का है।

नागमंगला में शिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित हैं भ्राता गोविन्द राजू, डा. कमलाकर, ब्र० कु० प्रामेश जी तथा उमा जी

ऊना (हि. प्र.) में शिवरात्री के अवसर पर ब्र० कु० रमेश ध्वज लहराने के बाद मुख्य अतिथि को "प्यूरीटी" अखबार भेंट कर रही हैं

भीलवाड़ा में आध्यात्मिक सम्मेलन में मंच पर ब्र० कु० सुरेन्द्र, भगवान दास जी, भ्राता मदन लाल जी, ब्र० कु० आरती जी, शिक्षा अधिकारी जैन, ब्र० कु० निर्मला, शिव कुमार, भ्राता धनपत लाल बोहरा इत्यादि बैठे हैं

दिल्ली साऊथ में एक धर्म सम्मेलन का आयोजन किया गया, अन्य धर्मों के वक्तागण उपस्थित थे। उन्होंने अपने विचार रखे। मंच पर सभी धर्मों के प्रतिनिधि बैठे हैं

जूनागढ़ शिव जयन्ती महोत्सव के शुभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में गिरनार साधना आश्रम के महाराज अपने विचार व्यक्त कर रहे हैं। पास में ब्र० कु० दमयन्ती, ब्र० कु० सरस्वती, ब्र० कु० कोकिला बहन बैठी हैं

शिवरात्री कार्यक्रम में जेलर भ्राता खरोटे विचार प्रकट करते हुए। ब्र० कु० कुसम, जिला न्यायाधीश भ्राता सोमलवार जी तथा ब्र० कु० शंकर और अशोक बैठे हैं।

होशियारपुर सेवा केन्द्र पर शिवरात्री पर्व के लपलक्ष्य में ध्वजारोहण के पश्चात डा. गोयल जी को ब्र० कु० हरबंस चित्रों की व्याख्या दे रही हैं

बिलासपुर में शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर शिवबाबा का परिचय देती हुई ब्र० कु० कुसम बहन । मंच पर मुख्य अतिथि भ्राता बी. आर. यादव, कृषि राज्यमन्त्री म० प्र०, भ्राता डा० आर. पी. तिवारी, ब्र० कु० गीता बहन बी. जे. वराडपांडे चीफ़ ज्यूडिशियल मजिस्ट्रेट तथा ब्र० कु० भावना

मेरठ में शिवरात्रि समारोह में मेरठ के प्रसिद्ध वकील भ्राता गजराज सिंह जी अपने भाव प्रकट करते हुए । मंच पर (बांये से) ब्र० कु० कमलेश, ब्र० कु० विनोद, भ्राता हरिदत्त सिंह जी, बहन गायत्री मोदी जी, ब्र० कु० कमल सुन्दरी जी तथा ब्र० कु० मंजू जी बैठी हैं

त्रिमूर्ति शिव जयन्ति के उपलक्ष्य में कलकत्ता राय-बगान सेवा केन्द्र पर ध्वजारोहण करती हुई ब्र० कु० सन्तरी बहन । अन्य ब्र० कु० भाई बहन खड़े हैं

बोकारो लायन्स क्लब में शिवजयन्ती उपलक्ष्य में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन पब्लिक रिलेशन आफीसर भ्राता ओ. एन. पंचालर तथा भ्राता पी. जयसवाल, एस. डी. ओ. कर रहे है । साथ में उपस्थित ब्र० कु० कुसुम, अर्चना जी, अंजू जी तथा सुमन बहन।

सर्वधर्म सम्मेलन' में बाये से दायें भ्राता के. सी. लाड, ब्र० कु० मोहिनी जी, श्रीमती ब्रिगेडिर वी. के. पशरीचा, ब्रिगेडिर वी. के. पशरीचा, हरबंससिंह छाबड़ा, ब्र० कु० किरण बैठी हैं

जतनी में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता हसन इकबाल जी (D. R. M. S. E. Rly) कर रहे हैं। ब्र० कु० कमलेश जी व भ्राता पटनायक जी (A. D. R. M.) साथ में खड़े हैं

पोरबन्दर आध्यात्मिक संग्रहालय देखने के लिए जी. ई. बोर्ड के मेम्बर भ्राता ज्योति बसु उनके साथ सौराष्ट्र के चार सुप्रसिद्ध इन्जिनियर्स थे। ब्र० कु० रक्षा बहन स्वर्ग के माडल पर समझा रही है

वारगंल सेवा केन्द्र की ओर से आध्यात्मिक कार्यक्रम में डा. लक्षमन मूर्ति अपने अनुभव सुना रहे हैं, मंच पर भ्राता रमन जी, भ्राता राव जी, भ्राता अब्दुल खादार जी, ब्र० कु० सविता जी व अन्य भाई बैठे हैं

आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घान दीप जलाकर इन्दु बहन पटेल कर रही हैं। पास में खड़े हैं सुरेश जी, मजिस्ट्रेट भ्राता बागड़े जी तथा ब्र० कु० मन्जू जी

गोहाटी विश्वविद्यालय के वाइस चान्सलर जैमिनी मोहन चौधरी अपने विचार लिख रहे हैं, साथ में ब्र० कु० शीला, ब्र० कु० बीना, सदानन्द, शिव प्रसाद एवं सर्व कमेटी के सदस्य खड़े हैं

रोपड़ सेवा केन्द्र पर शिवध्वजारोहण हुआ। सभी बहन-भाई झंडे के नीचे शुभ संकल्प ले रहे हैं

रांची में शिवध्वजारोहण भ्राता बैनीगोपाल मिश्रा जी एवं प्राध्यापक ने किया। साथ में ब्र० कु० आर मोहन तथा अन्य भाई बहन बाबा की याद में खड़े हैं।

कटक सेवा केन्द्र पर शिवरात्री के शुभ महोत्सव पर शिव बाबा का झंडा लहराया गया। चित्र में भ्राता रणजीत मोहनती प्रेसीडेन्ट बार एट-ला व ब्र० कु० कमलेश जी तथा क्लास के अन्य भाई-बहन दिखाई दे रहे हैं

यह चित्र त्रिमूर्ति शिव जयन्ती पर बड़ौदा में निकाली गई शोभा यात्रा का है।

नागमंगला में शिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम में उपस्थित हैं भ्राता गोविन्द राजू, डा. कमलाकर, ब्र० कु० प्रामेश जी तथा उमा जी

ऊना (हि. प्र.) में शिवरात्री के अवसर पर शिवध्वज लहराने के बाद मुख्य अतिथि को "प्यूरीटी" अखबार भेंट करते हुए।

सतयुग और सम्बन्ध

ब्र० कु० रमेश, गामदेवी, बम्बई

इस सृष्टि को कई लोग नाटक या रंगमंच कहते हैं। इससे सिद्ध होता है कि इस रंग-मंच पर उपस्थित सब पात्र (Actor) हैं और वे अपना-अपना अभिनय समयानुकूल रीति से बजाते हैं। अगर यह सृष्टि नाटक है तो जरूर जैसे बाकी सब नाटकों में एक कथा (Story) होती है वैसे कथावस्तु यहां पर भी होगी। कथा में जरूर सभी पात्रों का आपस में कोई न कोई संबंध रहता है। बिना संबंध के तो कोई कथा होती ही नहीं। संबंध के कारण उसमें कोई मुख्य (Hero) पात्र होंगे तो अन्य छोटे-बड़े पात्र भी होंगे। कोई उसमें थोड़ा समय के लिये तो कोई बहुत ज्यादा समय तक अपना पार्ट बजाते होंगे। कथावस्तु भी सदा एक समान नहीं होती और उसमें बातें आगे-पीछे तथा ऊपर नीचे जरूर होती हैं और यह सब बातें ज़रूर आपस में संबंध रखती होंगी। अर्थात कथा के प्रमाण नाटक के अन्दर पात्रों का तथा प्रसंगों का आपस में ज़रूर संबंध होता है।

सृष्टि रूपी यह नाटक तथा उसमें सब पात्रों का आपसी संबंध—नाटक चैतन्य के कारण, सत्य (Real) है। कई वर्षों पूर्व बंबई में एक राधीमाता नाम की अनन्य माता प्रतिदिन इस ईश्वरीय ज्ञान योग की पढ़ाई पढ़ती थी। उसकी मृत्यु के पश्चात्, एक दिन भोग के समय उसकी आत्मा को शिवपिता परमात्मा ने संदेशी बहन के तन में, सबको मिलने के लिये भेज दिया। मैं भी उस समय वहां उपस्थित था और इसी कारण मुझे प्रत्यक्ष में उनसे मिलने का मौका मिला। उनसे मिलते ही मैंने एक छोटा-सा प्रश्न पूछा कि 'राधीमाता अब तो आपको नया शरीर और नये संबंधी मिले होंगे'। तो उन्होंने 'हां' कहा। तदुपरांत मैंने पूछा कि आपके नये संबंधी कौन और कहां हैं ?

उस आत्मा ने मुझे बहुत ही सुन्दर जवाब दिया और कहा कि "जब मैं आप सबसे मिलने के लिये नीचे आ रही थी तब बाबा ने मुझे कहा कि बच्ची, अब तुम नीचे जा रही हो, वहां रमेश बच्चा तुमसे मिलेगा और पूछेगा कि आपने अब कहां जन्म लिया है और नये संबंधी कौन हैं ? तब बच्चे को कहना कि 'मैंने कहां और किसके पास जन्म लिया है यह याद-शक्ति मेरे पास पूर्णरूप से अभी है परन्तु यह सृष्टि-रूपी नाटक सत्य (real) नाटक है न कि झूठा (Artificial)। यह सिद्ध करने के लिए बाबा चाहते हैं कि यह बात सच्ची न बतावे तो अच्छा है। बाबा की इस श्रीमत अनुसार 'मैंने कहां जन्म लिया है' वह मैं नहीं बताऊंगी परन्तु इतना कह सकती हूं कि मैंने एक बहुत अच्छे रॉयल परिवार में जन्म लिया है। उस परिवार में बहुत समय से कोई बच्ची नहीं थी। इसी कारण मेरे जन्म से ही वहां एक आनन्द की लहर छा गई है और सब प्रकार के वैभवों से मेरी पालना हो रही है।

बहन के इस जबाव से कई बातों की जानकारी हुई। एक तो यह सिद्ध हुआ कि यह सृष्टि रूपी नाटक सत्य है—मिथ्या नहीं है। शंकराचार्य जी आदि अनेकों ने इस सृष्टि को मिथ्या माना है। यदि सृष्टि मिथ्या है तो उसके सब सम्बन्ध और व्यवहार मिथ्या होने चाहिये। परन्तु सृष्टि सत्य है और उसके अन्दर सब सम्बन्ध और वस्तु इत्यादि सभी सत्य है।

दूसरी बात उस बहन के अनुभव से सिद्ध हुई कि वर्तमान समय में एक साधारण शरीर एवं संबंध-

धारी बहन, नये जन्म में, इसी सृष्टि में, एक रॉयल घर में जन्म लेने में समर्थ हुई। अर्थात् संगमयुग में किए हुए कर्मों का प्रत्यक्ष फल, अर्थात् इसी सृष्टि में, अच्छे घर में जन्म मिलना है। इससे यह बात भी सिद्ध होती है कि भविष्य के हमारे नये सम्बन्ध बहुत ही अच्छे होंगे।

सम्बन्ध—यह प्राप्ति का साधन भी है तो सम्बन्ध बंधन का रूप भी बन जाता है। सम्बन्ध वह बंधन न बनें इसीलिए द्वापरयुग से अनेक प्रक्रियाएं शुरू हुईं। संन्यासियों ने संन्यास करना शुरू किया। संन्यास के पीछे यही लक्ष्य था कि देह के जो भी सम्बन्धी हैं उसी सम्बन्ध रूपी बंधन में न फंसे। घर-बार, आदि से जो भी सम्बन्ध बनते हैं उन सब सम्बन्धों को भूलने के लिये, पुरुषार्थ करने का लक्ष्य संन्यासियों ने अपने सामने रखा। इसी कारण मनु-स्मृति आदि धर्मग्रन्थों में चार आश्रम—ब्रह्मचर्या-श्रम, गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थाश्रम और संन्यासाश्रम, की रचना समाज के लिए आवश्यक बताई। जैन धर्म में दीक्षा लेना, बौद्ध धर्म में भिक्षुक बनना, तो ईसाई धर्म में नंस (Nuns) या पादरी (Priest) बनने की बात बताई गई। इस प्रकार सम्बन्धरूपी बन्धन को तोड़ने से ही मुक्ति मिलती है—ऐसा माना गया। सम्बन्धरूपी बन्धन ही समाज में दुखों की जड़ है—ऐसा माना गया। ट्रस्टीशिप (Trustee Ship) की भावना भी यही बात सिद्ध करती है कि आप अपनी सम्पत्ति के साथ मालिकपने का सम्बन्ध मत रखो परन्तु निमित्त हो यह सम्बन्ध रखो। सम्बन्ध के कारण अहंकार उत्पन्न होता है और सम्बन्ध ही मोह आदि विकारों का मूल है। मेरा पति, मेरे बच्चे, मेरा घर, इस तरह मेरा-पन का भाव रूपी सम्बन्ध हरेक बंधन की जड़ है—ऐसा सबने माना। परन्तु यह सर्व सम्बन्धरूपी बन्धन को तोड़ने का सच्चा और सरल उपाय कौन-सा है ?

यह सरल उपाय अर्थात् जब सच्चा सम्बन्ध है तो यह सृष्टि स्वर्ग है और जब सम्बन्ध का तमो-प्रधान स्वरूप है तब यह सृष्टि तमोप्रधान दुःखदायी बन जाती है। दुःख से सुख में जाने के लिए भी विशेष एक सम्बन्ध का कंगन है। परम-पिता परमात्मा वह विशेष सम्बन्ध सिर्फ बताते ही नहीं हैं परन्तु वास्तव में उसी सम्बन्ध की स्थिति में स्थित करते हैं। रचना का रचता के साथ जो भी सम्बन्ध है उसीमें विशेष सम्बन्ध को याद दिलाते हैं। पहिले तो सबका सम्बन्ध रचयिता के साथ जोड़ते हैं। परमात्मा के साथ परमपिता का सम्बन्ध आत्माओं को जोड़ने वालाहै। और उसी परमपिता की सन्तान होने कारण, आपस में, एक पिता परमे-श्वर की सन्तान के नाते से भाई-भाई हैं। तो यह दो सम्बन्ध—परमात्मा के साथ आत्मा के सम्बन्ध से पिता-पुत्र का, और आपस में आत्माओं का सम्बन्ध भाई-भाई का, यही सही सम्बन्ध हैं। बाकी सब सम्बन्धों का त्याग करना है। स्त्री, धन आदि माया नहीं है परन्तु यह सम्बन्ध-रूपी सृष्टि माया है, ऐसा बताते हैं। इसीलिए घर बार का त्याग नहीं परन्तु गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए न्यारे और प्यारे रहने का लक्ष्य बताया। विकारों का त्याग का अर्थ ही है कि सर्व प्रकार के सम्बन्ध में जो मेरेपन की बीमारी लग गई है उसे दूर करना। मेरेपन में भी सूक्ष्म परिवर्तन बताते हैं कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूं। आत्मा के सम्बन्ध से सबसे व्यवहार करो। इस तरह विशेष सम्बन्ध जोड़ने के कारण ही आत्मा की उन्नति होगी और इस विशेष सम्बन्ध की धारणा करने वाला ही सतयुगी सच्चे सम्बन्ध में आयेगा।

ब्रह्मा बाबा के जीवन में यह बात विशेष रूप से देखने में आई। उन्होंने अपने दैहिक सम्बन्धों के प्रति अपनी दृष्टि में मूलभूत परिवर्तन किया। उन्होंने, अपने लौकिक युगल, बच्ची, बच्चा तथा अन्य रिश्तेदार होते हुए भी, सबके प्रति अलौकिक बाप के सम्बन्ध से व्यवहार किया। आज भी हमारे कई बहन-भाइयों के जीवन में लौकिक सम्बन्ध की भासना हमें नहीं आती। जैसे आलराउण्डर दादी और गुलज़ार बहन। देहली में एक साथ रहते हुए यह भासना हमें नहीं आती कि वे दोनों लौकिक मां-

बच्ची के सम्बन्ध में बन्धे हुए हैं। परन्तु दोनों एक परमपिता परमात्मा की सन्तान हैं उसी सम्बन्ध की सुगंध उनके व्यवहार से आती है। इस तरह का सम्बन्ध गृहस्थ-व्यवहार में रहने वाले सब भाई-बहनों के जीवन में आ जाये तो सबका गृहस्थी जीवन आश्रम समान आदर्श बन जाय। सतयुग में गृहस्थी जीवन इस तरह से आदर्श व्यवहार का केन्द्र होगा और उसी की नींव (foundation) अभी परमपिता परमात्मा डालते हैं। सतयुग का अर्थ ही है आपस में आदर्श-सम्बन्ध।

सम्बन्ध से प्राप्ति भी होती है। लौकिक दुनिया के कानून कहते हैं कि बच्चे को बाप से वर्सा मिलता है, उसी का कारण है सम्बन्ध। बच्चे को बाप से वर्सा प्राप्त करने में मेहनत नहीं करनी पड़ती लेकिन बच्चे के सम्बन्ध से बच्चा बाप की मलकियत का भविष्य का मालिक है। इस तरह वर्सा पाना यह भी सम्बन्ध के कारण प्राप्त होने वाला एक अधिकार है। और यह सीधा (Direct) होना चाहिए, बीच में कोई अन्य वस्तु या व्यक्ति की मर्यादा की (Limitations) जरूरत नहीं है। हमें विदेशों में एक बात विशेषतः सर्व स्थानों पर पूछी जाती थी कि हमें योग में परमात्मा के साथ सीधा (Direct) बुद्धियोग का सम्बन्ध जोड़ने की क्या आवश्यकता है? बीच में हम क्यों नहीं ईसामसीह (Christ) को रखें? तब हम उन्हें बताते थे कि यह सम्बन्धरूपी दीवार है। यदि आप इसामसीह (Christ) का सम्बन्ध बीच में लायेंगे तो जो वर्सा प्राप्त होगा उसके बीच में क्राइस्ट रूपी दीवार या मर्यादा आयेगी। अर्थात् जब इस सृष्टि पर क्राइस्ट का आगमन होगा तब ही आप सृष्टि रूपी रंगमंच पर आ सकेंगे। इसलिए परम-पिता परमात्मा बाप के साथ सीधा (Direct) सम्बन्ध रखो तो वर्सा प्राप्त होगा। सतयुगी वर्सा परमात्मा बाप से बच्चे का सम्बन्ध प्रस्थापित करने से प्राप्त होता है। इससे सिद्ध होता है कि परमपिता परमात्मा के सिवाय अन्य किसी के साथ सम्बन्ध रखा तोउस व्यक्ति के साथ का सम्बन्ध एक दीवार बन जायेगा और जब तक वह व्यक्ति सृष्टि पर नहीं आयेगा तब तक उनके साथ सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति भी नहीं आ सकता। इस तरह से सम्बन्ध यह एक बहुत सूक्ष्म परन्तु शक्तिशाली वस्तु है। लौकिक या जिसमानी गुरु के साथ का सम्बन्ध हमें हद में ले जायेगा और इस हद के कारण द्वापरयुग के बाद हम सृष्टि पर आ सकेंगे। इसलिए गुरुओं के साथ का सम्बन्ध भी भूलना है।

इस तरह सतयुग के प्रति दृष्टि-बिंदु रखेंगे तो सतयुग के प्रति देखने का दृष्टि-कोण बदल जायेगा। लौकिक बाप से, जैसे हद का वर्सा, शरीर के सम्बन्ध से मिलता है उसी तरह से परमपिता परमात्मा के साथ आत्मा रूप से या रचना-रचयिता के सम्बन्ध से, पारलौकिक पिता और पुत्र का सम्बन्ध प्रस्थापित करने से सतयुग का वर्सा सहज ही प्राप्त होगा। अन्य आत्मायें जो परमात्मा के साथ यह विशेष सम्बन्ध प्रस्थापित नहीं करतीं, वे सतयुग में नहीं आ सकेंगी। द्वापर युग से इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर आने-वाली आत्माएं अनेक प्रकार की साधना एवं पुरुषार्थ करतीं हैं परन्तु यह विशेष सम्बन्ध परमात्मा के साथ प्रस्थापित नहीं करतीं उसी कारण सतयुग में नहीं आ सकतीं। सतयुग यह सिर्फ साधना-साध्य नहीं है परन्तु सम्बन्ध-साध्य है—अर्थात् यह विशेष सम्बन्ध की देन है।

इसके अतिरिक्त एक और बात है कि परमपिता परमात्मा ने हम आत्माओं का सम्बन्ध अलौकिक पिता के साथ भी जुटवाया है। प्रजापिता ब्रह्मा बाबा को आदि पिता के रूप में जो मानेंगे वही सृष्टि की आदि से इस सृष्टि पर आ सकेंगे। इस तरह से आदि-पिता के साथ भी यथार्थ सम्बन्ध प्रस्थापित कराते हैं। उसी कारण तो कहते हैं कि सतयुग में है एक पिता,द्वापर में हैं दो पिता और संगम में हैं तीन पिता। उर्दू भाषा में मनुष्य को आदमी अर्थात् आदम की सन्तान, संस्कृत में ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मा की रचना या वंशावली भी इसीलिये कहते हैं।

इस तरह से विचार करने से जानकारी मिलती

है कि सम्बन्ध यह वन्धन भी है तो विकास की सीढ़ी भी है और सच्चा सम्बन्ध प्रस्थापित करने से सतयुग वर्से के रूप में प्राप्त होगा। बाकी कोई भी युग वर्से से प्राप्त होने वाला नहीं है। वाकी सब हैं मेहनत के युग और सतयुग है वर्से का युग अर्थात् सच्चे सम्बन्ध से प्राप्त होने वाला युग। इसीलिए शिवपिता परमात्मा ने कहा है कि सतयुग यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है। तो क्यों नहीं हम सब परमात्मा के साथ सच्चा सम्बन्ध जोड़कर अपना जन्म-सिद्ध अधिकार प्राप्त कर लें ?

"अप्रैल–फूल"

ब्र० कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली

हमने तो समझा था,
आगे बढ़ रहे हैं हम।
चढ़ रहे, फल रहे,
फूल रहे हैं हम ॥
पांव रखते ही—
आंख खुलते ही—
खूब खाया और खेला,
भा गया जग का रेला पेल
ज्यों-ज्यों होते गए बूढ़े,
रंग-रंगीनी में भए खड़े,
खूब पाली-पोसी अपनी देह।
बिल्कुल भूला सच्चा नेह।
धन कमाया, नाम कमाया,
महल बनाया, कुटुम्ब बढ़ाया;
ले आए सुख के सारे साधन,
शृंगार किए अति मन भावन;
रचना रची, सृष्टि बढ़ाई,
खूब बजी घर में शहनाई;
पर यह क्या ?
मन की शहनाई कहां गई ?
खुशी अन्दर क्यों न भई ?
क्यों यह तनाव, क्यों अटकाव ?
क्यों उदास, क्यों भटकाव ?
खाली मन का खाना क्यों ?
खुशी अपने से र-वाना क्यों ?
कुछ न पाया, सर्वस्व पा के भी,
हार मिली क्यों, जीत के भी,
सच को माना झूठ,
झूठ की पकड़ ली मूठ,
फेरा ईश्वर की ओर से मुख,
न पहचाना आत्मिक सुख,
खो गए हमारे दिव्य गुणों के गहने,
चलते रहे हम, स्वार्थ को पहने
चला गया सारा ओज,
आ गई सारी खोट ही खोट,
अब क्यों फिरे घबराया-घबराया,
जैसे कुछ भी समझ न पाया;
अरे लुट भी गया सब कुछ,
फिर भी मालूम न पड़ा कुछ,
सुन यह तो—
माया ने मुझे फूल (fool) बनाया।
तेरा अप्रैल फूल बनाया ॥
बिगड़ा सो बिगड़ा—
बचे को सम्भालें अभी।
अभी नहीं तो फिर नहीं कभी ॥

□

सत्कार

ब्र० कु० आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

सत्कार शब्द ही दिव्य आचरण का प्रतीक है। सत्कार देना महानता की निशानी है और अलौकिकता को बढ़ावा देने का आधार भी है। सत्कार की कामना हर मनुष्य करता है, परन्तु ऐसा बहुत कम लोग ही महसूस करते हैं कि जिसकी चाहना हमें है, उसकी ही चाहना दूसरों को भी है। अर्थात् सत्कार देना हर कोई नहीं जानता। वास्तव में सत्कार देना दातापन का संस्कार है और सत्कार मांगना भिखारीपन का संस्कार है।

सत्कार मांगने से नहीं मिलता

सत्कार अर्थात् सत्+कार—यहां कार, कार्य का पर्याय है। अर्थात् सत् कर्म मनुष्य को सत्कार का अधिकारी बना देते हैं। मनुष्य की महानताएं और योग्यताएं स्वत: ही उसे सत्कार का पात्र बना देती हैं। तो वास्तव में जो यह कहते हैं कि हमें मान नहीं मिलता—यह अयथार्थता है। वास्तव में तो 'मान' का त्याग सत्कार का अधिकारी बना देता है। अत: हमें अपना कर्तव्य मान प्राप्ति की भावना से नहीं करना चाहिए। हमारे कर्मों की अलौकिकता व महानता लोप हो जाती है। वास्तव में तो अनेकों का अनुभव यही है कि जितना मान का त्याग किया जाता है, उतना ही मान परछाई की तरह पीछे-पीछे आता है।

मान के लिए स्वमान की आवश्यकता

मान और यश की प्राप्ति हर मनुष्य में बीज रूप में समाई हुई है और यश की प्राप्ति श्रेष्ठ भाग्य की निशानी है। परन्तु जो आत्माएं—आत्म सम्मान में स्थित हो जाती हैं, जिन्हें अपने श्रेष्ठ स्वमान का भान हो जाता है, सांसारिक मान उनके मन को आकर्षित नहीं करता। स्वमान की स्थिति उनके मन को भरपूर रखती है, परन्तु परिणामत: अनेकों के मन पर उनकी स्थाई छाप पड़ती है और उनके मन में ऐसी महान आत्मा के लिए आदर भाव बैठ जाता है। अत: मान की कामना से आदर नहीं मिलता, स्वमान की स्थिति से सम्मान प्राप्त होता है।

बात सत्कार देने की

तो यहाँ हम चर्चा कर रहे हैं, दूसरों को सत्कार देने की। अव्यक्त बाप-दादा ने भी पिछले वर्ष कहा था कि अब रिगार्ड का रिकार्ड बजाओ। तो दूसरों को सत्कार देने से न केवल हमें सत्कार मिलता है बल्कि ईश्वरीय सेवा के श्रेष्ठ कार्य में आने वाले अनेक विघ्नों से हम बच जाते हैं। तो दूसरों को सत्कार देना—हमें अपना स्वभाव बनाना पड़ेगा। प्राय: मनुष्य अपने अहंकार वश या दूसरों के प्रति ईर्ष्या, द्वेष वश सत्कार नहीं देता और फलस्वरूप अपने ही मार्ग को अधिक जटिल बना देता है और फिर सोचता है कि अगर मैं अमुक व्यक्ति को उस स्थान पर सत्कार देता तो मुझे इतनी परेशानी न होती।

हमने देखा—भगवान भी अपने बच्चों को सत्कार देते। सत्कार देकर बाबा अनेक कमज़ोर बच्चों को आगे बढ़ने का साहस दे देते हैं।

टकराव से बचाता है सत्कार

पुरुषार्थी आत्माओं की बहुत बड़ी समस्या "टकराव" का हल है सत्कार देना। अगर हम दूसरों की महानताओं को जानते हुए उनके प्रति मन में आदर भाव रखेंगे तो हमारे बोल सदैव सुखदाई होंगे और वाचा व मनसा के संघर्ष से हम निवृत्त हो जाएंगे। अत: सुखी जीवन जीने के लिए हमें सत्कार देने की कला सीखनी होगी। नहीं तो हम यों

ही दूसरों को अनादर सूचक शब्द कहकर आपसी तनाव खड़ा कर लेते हैं और फिर शान्ति के लिए जूझते रहते हैं।

आपस में स्नेह बढ़ाता है सत्कार

जिस परिवार या संगठन में अच्छे आचरण वाले व्यक्ति होते हैं, वहां पारस्परिक वार्तालाप आदर-युक्त शब्दों के साथ होता है जिससे परस्पर स्नेह बढ़ता है, संगठन मज़बूत बनता जाता है और जहां एक-दूसरे के प्रति सत्कार नहीं—वहां बना बनाया संगठन भी टूट जाता है। अत: उन महानात्माओं को जो संगठन को एकता के सूत्र में बांधना चाहते हैं, परस्पर आदर भाव बढ़ाना चाहिए। आदर भाव होने से दूसरों की गलती होने पर हमारे उमंग उत्साह दिलाने वाले शब्द ही निकलेंगे। हम दूसरों को शिक्षा व सावधानी भी आदरपूर्वक देंगे।

सेवा में रूचि बढ़ाता है सत्कार

जहां परस्पर सत्कार का वातावरण हो, वहां सभी का मन सेवा करने में लगता है। जहां अपमान सूचक शब्दों की बौछार होती हो वहां से आत्माएं पलायन कर जाती हैं। अत: हमें जबकि अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सेवा में लाना है तो उसका सबसे प्रथम हथियार होगा सत्कार देना। सत्कार देकर हम दूसरों से बड़े-से-बड़ा सहयोग ले सकते हैं। जहाँ सत्कार है वहां आत्माएं सहयोग देने के लिए खिंची चली जाती हैं।

सत्कार देने के लिए

सत्कार देने के लिए हमें दूसरों की महानताओं का ज्ञान होना आवश्यक है और हमारे मन में दूसरों को आगे बढ़ाने की सच्ची कामना होनी चाहिए। हमें यह आभास होना चाहिए कि हम दूसरों को सत्कार देकर दूसरों का बहुत कल्याण कर सकते हैं

और ईश्वरीय सेवा के लिये जिम्मेदार आत्माओं को तो दूसरों के अपमान की भावना स्वप्न तक भी नहीं होनी चाहिए। मान न देना किसी-न-किसी तरह के अभिमान का कारण है। अत: जबकि भगवान भी हर आत्मा को सत्कार देते हैं तो हमारा क्या जाता है—दूसरों को सत्कार देने में। बिना खर्च, बिना प्रयास हम यह महान गुण अपने में ला सकते हैं। और तब हमारा भी मन बड़ा ही प्रसन्न रहेगा और दूसरों का भी।

हमें जब कहीं विरोध भी प्रकट करना हो तो भी हमारे शब्द आदर युक्त होने चाहिए, इससे अन्य आत्माओं पर अच्छा प्रभाव पड़ता है।

मान देने वाला

मान देने वाली आत्मा का, दूसरों के मन पर सहज ही अधिकार हो जाता है। सब उसकी बात मानने लगते हैं, उसके इशारे पर कार्य करने लगते हैं और परिणामत: व्यवहार में कोई कठिनाई नहीं होती। अत: मान देने वाला व्यक्ति स्वयं ही महान बनने की प्रेरणा देता है। मान देकर तो शत्रु को भी मित्र बनाया जा सकता है। मनुष्य को बड़ी-से-बड़ी बुराई से छुड़ाया जा सकता है। अत: हमें सत्कार देने की कला को अपने जीवन का अंग बना देना चाहिए। इसलिए यह उक्ति प्रसिद्ध है कि—

"जो देगा मान, वही बनेगा महान"

शिव भावानुवाच

१. स्वाभिमान चढ़ती कला का, देहाभिमान गिरती कला का साधन है। इसलिए सदा स्व-अभिमानी बनो देह-अभिमानीनहीं।

२. मीठे बच्चे—बुद्धि रूपी विमान को व्यर्थ संकल्प रूपी पहाड़ी से बचाते रहो।

पथिक की खोज

ले० अशोक कुमार, आबू

मन की सच्ची शान्ति को प्राप्त करने के लक्ष्य से पथिक जीवन पथ पर बढ़ रहा है। भौतिक साधनों का उपयोग करते-करते पथिक का जी ऊब चुका है। इन साधनों के उपभोग ने उसे आकाश में चमकने वाली आकर्षक किन्तु क्षणिक बिजली के समान ही शान्ति प्रदान की है। अचानक पथिक के विवेक ने उसका मन रूपी दरवाज़ा खटखटाया। उसने स्वयं से पूछा, "क्या मेरे जीवन का लक्ष्य बिन्दु भौतिक साधनों का उपभोग करना ही है?" विचार करते ही वह गम्भीरता के सागर में समा गया तथा अपनी दैनिक जीवन प्रणाली पर दृष्टिपात कर व्याकुल हो उठा। उसके मन को इन शब्दों ने झंकृत कर दिया, "हे प्राणी। तू कौन है? कहां से आया है? तुझे यहां किसने किस कार्य के लिए भेजा है?"

लक्ष्य की स्मृति आते ही पथिक के कदम लक्ष्य बिन्दु की ओर चल पड़े। भौतिक साधनों का परित्याग कर वह विभिन्न धार्मिक तीर्थ स्थलों का भ्रमण करने लगा। सभी स्थानों पर जाकर अपने लक्ष्य पूर्ति हेतु याचना की। किन्तु केवल दर्शनार्थ सैद्धान्तिक एवं अतीत की गाथाओं पर आधारित इन धार्मिक स्थानों से व्यवहारिक जीवन को दिव्यता से परिपूर्ण कर परमानन्द के सागर में सराबोर करने एवं सच्ची शान्ति प्राप्ति करने का हल नहीं मिल सका। इस मृगतृष्णा सम भ्रमण से उसके मन पर निराशा के बादल छाने लगे। आशाओं का दीपक हाथ में लेकर वह आगे चल पड़ा। तपस्या मग्न तपस्वियों की पावन दृष्टि से अपनी लक्ष्य पूर्ति की आशा लेकर वह विभिन्न गुफाओं, कन्दराओं व पर्वतों पर तपस्या मग्न अनेक तपस्वियों से मिला और अनुभव किया कि ये आत्मायें भी सच्ची मन की शान्ति प्राप्त कर परमानन्द के सागर में समाने के परमसौभाग्य से वंचित हैं। फिर क्या था? निराशारूपी काली निशा उसके चारों ओर छाने लगी।

निराशा से भरपूर पथिक के मन में पुनः आशा की किरणों का प्रादुर्भाव हुआ। दयालु, कृपालु प्रभु से दयादृष्टि की याचना करता हुआ वह भारत देश के राजस्थान राज्य में सिरोही जिले में स्थित सुप्रसिद्ध, प्रकृति के मनोरम दृश्य को अपने आंचल में छिपाये आबू पर्वत पर जा पहुंचा, जहां दिलवाड़ा मन्दिर, अचलगढ़, गुरूशिखर आदि तीर्थ स्थानों का भ्रमण कर उसे यह दिव्य प्रेरणा मिली कि योगी जीवन ही सच्ची शान्ति, परम आनन्द की प्राप्ति का एक मात्र साधन है। योग क्या है, योग किससे, कैसे लगाया जाय आदि कौतूहल पूर्ण प्रश्न पथिक के मानस पटल पर छा गये। गहराई से विचार कर वह उस निर्णय पर पहुंचा कि सच्चा योग तो योगेश्वर पिता परमात्मा ही सिखा सकता है। यह स्मृति आते ही वह ईश्वरीय मिलन हेतु व्याकुल हो उठा, "हे प्रभु! कृपा करो, रास्ता दो," कहता-कहता पथिक कुछ समय के लिए अर्धचेतन स्थिति में स्थित हो गया।

कुछ समय पश्चात् शान्ति व परमानन्दमयी ईश्वरीय शक्ति की प्रभावशाली किरणें पथिक के अन्तरंग को स्पर्श करने लगीं। उसके मनरूपी मानसरोवर में आशाओं के कमल खिल उठे। तन को तसल्ली, मन को मौज, रूह को राहत देने वाली इन किरणों को प्राप्त कर पथिक का मन-मयूर नाच उठा। वह प्रभावशाली किरणों की दिशा में चल पड़ा। थोड़ी दूर चलने पर उसने अनुभव किया कि एक विशाल भव्य भवन से निकलती हुई पवित्रता, सुख-शान्ति की किरणों ने दूर-दूर चारों ओर के वातावरण में शान्ति व पवित्रता भर दी है।

समीप पहुंच कर पथिक ने यह जाना कि इस

भवन का 'नाम पाण्डव-भवन' है जो प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के देश-विदेश में स्थापित अनेक सेवा-केन्द्रों का मुख्यालय है। भवन के मुख्य द्वार पर अंकित 'पवित्र बनो योगी बनो' के हृदयस्पर्शी, प्रेरणाप्रद शब्दों ने पथिक को एक अनोखी शक्ति प्रदान की। प्रवेश करते ही पथिक पवित्रता व शान्ति के सागर में समाने लगा, मन में यह दृढ़ संकल्प उत्पन्न हुआ कि निःसन्देह यहां कोई ईश्वरीय शक्ति कार्य कर रही है। प्रांगण के मध्य लगे गुलाब के फूलों से लदे हुए वे पौधे वातावरण की शालीनता में चार चांद लगा रहे थे। ऐसा अनुभव हो रहा था कि सचमुच संसार रूपी कांटों के बीच यह फूल समान पवित्र स्थान सभी को अपनी तरफ आकर्षित कर रहा है। कुछ क्षण बाद एक श्वेत वस्त्रधारी पवित्रता व शान्ति के प्रकम्पन विकीर्ण करती हुई, अपनी दृष्टि में करुणा का सागर समाये, फरिश्ता-स्वरूप महिला उसके समीप पहुंच गई। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि तपस्या सजीव हो पवित्रता की चादर ओढ़ कर उसके सम्मुख उपस्थित हुई हो।

पथिक ने समीप आते ही पूछा—"देवी जी! क्या मैं इस पवित्र भवन का अवलोकन कर सकता हूं?" उस महिला ने बहुत ही आदरसूचक शब्दों से धीमे स्वर में उत्तर दिया, "प्रिय आत्मन्! आइये, वर्तमान समय सृष्टि मंच पर परमपिता परमात्मा निराकार शिव द्वारा चलाये जा रहे विश्व-परिवर्तन के महान कार्य को जान आप भी महान आत्मा बनने का पुरुषार्थ कीजिए।"

महिला के साथ-पथिक 'शान्ति स्तम्भ' नामक स्थान पर जा पहुंचा जो कि परमपिता परमात्मा शिव द्वारा आधार लिए गये साकार रथ प्रजापिता ब्रह्मा की दिव्य-स्मृति में बनाया गया है। शान्ति स्तम्भ पर अंकित प्रेरणादायक शिक्षाओं ने पथिक को नयी चेतना प्रदान की। उसने जाना कि भारत सभी देशों में महान देश है, परमपिता परमात्मा निराकार शिव सर्व आत्माओं के पिता तथा आबू सर्व तीर्थ स्थानों में महान तीर्थ है। तत्पश्चात वह पिता-श्री ब्रह्मा के कमरे में गया। बाबा के कमरे में प्रवेश करते ही पथिक अतीत की स्मृतियों में खो गया। उसे स्मृति आई कि एक दिन स्वप्न में यही व्यक्ति उसे मिला था जिसकी गोद में जाते ही पथिक प्रेम से पुलकित हो उठा था। मन को अनोखा आनन्द मिला था। पथिक मन ही मन प्रभु की महिमा का गुणगान करने लगा। साथ-साथ मार्गदर्शना दे रही फरिश्तास्वरूप महिला द्वारा हो रही ज्ञान वर्षा से उसके मन में प्रभु प्रेम के बीज अंकुरित हो गए। बाबा के कमरे से निकल कर अंगूर की बेल, अमरूद व विभिन्न फल फूलों से सुशोभित एक बगीचे में उसका जाना हुआ जहां एक बहुत ही सुन्दर कुटिया है जिसमें पिता-श्री अपने लाडले ब्रह्मा-वत्सों को शिक्षा प्रद पत्र लिखा करते थे। तदु-परान्त एक विशाल 'मेडीटेशन हाल में उसको ले जाया गया। उसने देखा कि लाल प्रकाश में तपस्या मग्न इन राजयोगियों के मुखमण्डल से दिव्यता की किरणें प्रस्फुटित हो रही थीं। ऐसा अनुभव हो रहा था कि ये इस स्थूल वातावरण से कहीं दूर जा बसे हों। सामने सन्दली पर विराजमान देवीस्वरूप महिला के नेत्रों से पावनता की दिव्य किरणें फैल रहीं थीं। ओहो! कितना शान्त व शीतल, मन को सुख देने वाला वातावरण था यह! जहां सम्पूर्ण शान्ति का साम्राज्य छाया हुआ था फिर हाल से निकल इन्द्रप्रस्थ ट्रेनिंग क्लास, विशाल भवन, लाइट हाउस, ऐरोप्लेन आदि भवनों का दिग्दर्शन कराया गया तथा विशाल भण्डार गृह का निरीक्षण किया। भण्डार गृह से निकलते एक तेजस्वी नवयुवक को देख उसका मन मयूर नाच उठा। महिला से अनुमति प्राप्त कर वह युवक से मिला। मिलने पर ब्रह्मा-कुमार आत्मप्रकाश, जिन्होंने नागपुर विश्वविद्या-लय से एम० एस० सी० में स्वर्णपदक प्राप्त किया है, ने कहा कि भोजन का मन पर गहरा प्रभाव पड़ता है, पवित्र भोजन योगी जीवन की पहली आवश्यकता है। इसीलिए शिव बाबा के इस

(शेष पृष्ठ ३६ पर)

बैतुल में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी में भ्राता एच. एस. परिहार वनमंडल अधिकारी को समझाती हुई ब्र० कु० रुकमणी जी

दिल्ली शाहदरा सेवा केन्द्र की ओर से ध्वजारोहण व कार्यक्रम किया गया, संसद सदस्य गिरधारी लाल डोगरा शिवध्वज लहरा रहे हैं, साथ में ब्र० कु० कमला सीता, चरणदास ब्र० कु० ब्रिजमोहन व अन्य उपस्थित हैं

फिरोजाबाद सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित सिरसा गंज में आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन नगर पालिका के ई. ओ. द्वारा सम्पन्न हुआ। साथ में ब्र० कु० सरला, धर्मपाल तथा अन्य भाई बहनें दिखाई दे रही हैं

कटक में दीदी मनमोहिनी डी. आई. जी. पुलिस, भ्राता पांडे जी तथा वहां के अन्य भाई बहनों के साथ

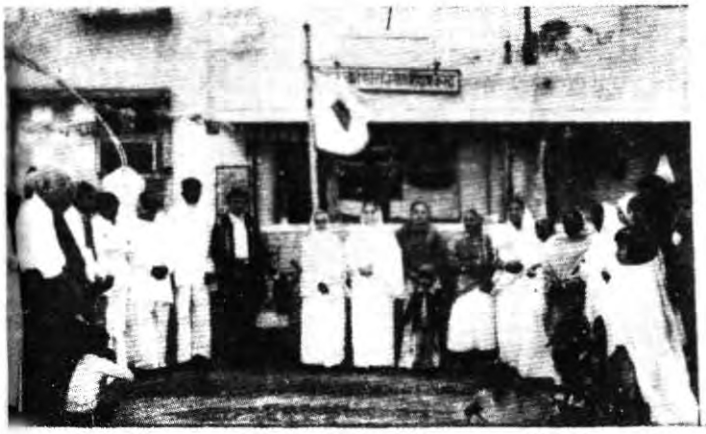

गांधीधाम में शिव जयन्ती पर ध्वज वंदन कार्यक्रम में मैजिस्ट्रेट भ्राता शशीकांत जी तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहनें

होन्नावर में शिवरात्रि महोत्सव मनाया गया। इस अवसर पर ४६ मोमबत्तियाँ जलाते हुए कामत जी, नायक जी, कर्की जी, ब्र० कु० भारती जी व ब्र० कु० कमलावती जी दिखाई दे रही हैं

मयूरगंज में शिवरात्रि कार्यक्रम में ब्र० कु० चन्द्रमोहन शिव बाबा का परिचय दे रहे हैं। भ्राता धीरेन्द्र नाथ पादी जिलाधीश तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति बड़े ध्यान से सुन रहे हैं। ब्र० कु० मनी तथा अन्य बहनें सामने दिखाई दे रही हैं

मोगा में शिवजयन्ती पर शिवध्वजारोहण मेजर भ्राता वखशी जी ने किया। साथ में ब्र० कु० संजीवन तथा अन्य भाई

रायपुर सेवा केन्द्र द्वारा जगदलपुर में शिव दर्शन प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए भ्राता वी. वी. वैद्य जिला एवं सत्र न्यायाधीश। साथ में खड़े हैं आर. डी. विश्वकर्मा एवं भैयालाल जी

भ्राता हुसन इकबाल (D.R.M.S.E. Rly) ब्र० कु० कमलेश जी तथा अन्य भाई बहनें जटनी में ४६वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती महोत्व का उद्घाटन ४६ मोमबत्तियां प्रज्वलित कर के कर रहे हैं

शिवरात्री के महान उत्सव पर बरनाला में एक कार्यक्रम रखा गया, चित्र में ब्र० कु० प्रताप जी, ब्र० कु० लेखराज ब्र० कु० ब्रिज जी व ब्र० कु० सुदर्शन जी मंच पर बैठी हैं

कानपुर किदवाई नगर सेवाकेन्द्र की ओर से बांदा में शिव-जन्ती पर आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन कर, अतिरिक्त जिलाधिकारी भ्राता ऋषिकेशव पाण्डेय जी खड़े हैं। पास में ब्र० कु० दुलारी बहन सम्बोधन करते हुए

भुवनेश्वर में शिवरात्री महोत्सव मनाया गया, मंच पर बायें से दायें ब्र० कु० मंजु, ब्र० कु० सन्देशी, भ्राता पी. एन. मिश्रा बैठे हुए दिखाई दे रहे हैं

पालम कालोनी (देहली) में महाशिवरात्री के अवसर पर बड़ी धूमधाम से प्रभात फेरी निकाली नई । चित्र में ब्र० कु० शुक्ला, हरीश व अन्य भाई बहनें दिखाई दे रहे हैं

चण्डीगढ़ में हुए विश्व शान्ती दिवस के अवसर पर पंजाब के राज्यपाल भ्राता अमीनुद्दीन अहमदखां सम्बोधन करते हुए। उनके दायीं ओर ब्र० कु० अचल जी तथा योगिनी जी तथा बाईं ओर हरियाणा के भूतपूर्व एडवोकेट जनरल भ्राता उमा दत्त गौड़ जी बैठे हैं।

उदयगिरी में शिवजयन्ती कार्यक्रम का उद्घाटन ४६ मोमबत्तयां प्रज्वलित करके किया गया

होशियारपुर में शिवरात्री महोत्सव के उपलक्ष में वहां के प्रसिद्ध डा. गोयल जी, पुलिस इन्सपेक्टर तारा चन्द जी तथा ब्र० कु० सुषमा जी एवं गीता जी ध्वजारोहण कर रही हैं

न्यायाधीश भ्राता कुलकर्णी जी रतलाम विद्युत मण्डल में आयोजित "औद्योगिक शान्ति प्रदर्शनी" के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्वलित कर रहे हैं। साथ में, बायें ब्र० कु० कला जी एवं दायें ब्र० कु० आशा जी खड़ी हैं

हाथरस में "महिला जागृति सम्मेलन" में मंच पर (दांई ओर से) ब्र० कु० मनोरमा जी, डा. किरण जी, प्राचार्य डा. इन्द्रा शर्मा जी तथा भाषण करते हुए ब्र० कु० सरोज बहन जी और उन के साथ ब्र० कु० बीना जी दिखाई दे रही हैं

गांधीधाम सेवा केन्द्र पर होली पर्व के उत्सव में आए इफको के जनरल मैनेजर भ्राता सिद्धपत जी साहोर को ब्र० कु० उमा जी ईश्वरीय सोमात भेंट कर रही है

नवांशहर सेवा केन्द्र में शिवरात्री महोत्सव के अवसर पर तहसीलदार भ्राता बी. डी. जोशी जो ध्वजारोहण कर रहे हैं। साथ में बहन ब्र० कु० सुन्दरी जी तथा अन्य भाई बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं

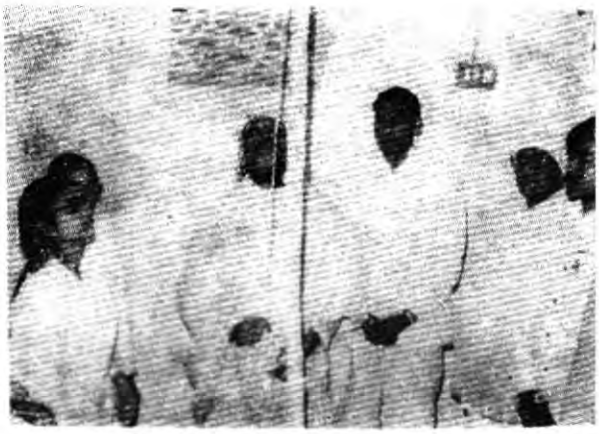

शिवजयन्ती महोत्सव पर पाटन सेवा केन्द्र में आयोजित ध्वजरोहण एवं स्नेह मिलन के अवसर पर गुजरात के प्रख्यात मुनि श्री भानु विजय जी ध्वजारोहण कर रहे हैं। पास में ब्र० कु० नीलम जी, झकु बेन जी, भ्राता काछिया जी, ब्र० कु० शीवा भाई तथा गोविन्द भाई जी परमात्मा शिव की याद में खड़े हैं

नेपाल में प्रदर्शनी देखने के पश्चात बीच में नगर पंचायत के अध्यक्ष भ्राता बाबू काजी जी, न० पा० के सेकेट्री भ्राता लक्ष्मण अधिकारी जी, भ्राता अग्रवाल जी, भैरव भाई, रामगोविन्द भाई व शीला बहन आदि खड़ी हैं

गावा सेवा केन्द्र की ओर से मालवण में राजयोग प्रदर्शनी लगाई गयी जिसका उद्घाटन माजी नगराध्यक्ष शाम ऐचरेकर दीप जलाकर कह रहे हैं। साथ में ब्र० कु० शोभा जी, नलिनी जी व अन्य बहन-भाई खड़े हैं

गुमला (रांची) ट्रेनिंग स्कूल में शिव-ध्वजारोहण किया गया। उस अवसर पर वहां के प्रिन्सिपल व विद्यार्थी उपस्थित थे

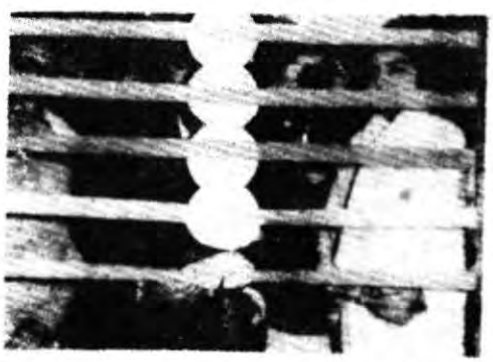

कटनी सेवा केन्द्र की ओर से शहडोल में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ज़िला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता के० सी० पारे दिखाई दे रहे हैं। साथ में हैं एस. डी. ओ. टेलीफोन तथा ब्र० कु० सुशीला जी

बलसार सेवा केन्द्र की ओर से धरमपुर गांव में विश्व-शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता के० टी० भट्ट जी (कलेक्टर) ने किया। वे ब्र० कु० भाई-बहनों के साथ बाबा की याद में खड़े हैं

डाक पत्थर में आयोजित शिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम के पश्चात् ब्र० कु० प्रेम बहन तथा अन्य भाई बहन मुख्य अतिथि के साथ दिखाई दे रहे हैं

फरुखाबाद में मिलिट्री मन्दिर में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए ब्रिगेडियर भ्राता पी. सी. पुरी जी। साथ में ब्र० कु० सुमन तथा अन्य भाई बहनें हैं

चन्द्रपुर में शिवरात्रि कार्यक्रम में जेलर भ्राता खरोटे विचार प्रकट करते हुए। मंच पर ब्र० कु० कुसम, जिला न्यायाधीश भ्राता सोमलवार जी, तथा ब्र० कु० शंकर और अशोक बैठे हैं

संकेश्वर में शिवरात्रि के अवसर पर ब्र० कु० महादेव जी भ्राता बी. ए. पाटिल अध्यक्ष तथा प्रिन्सीपल को शिव का परिचय देते हुए

काठमाण्डो (नेपाल) में शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर शिव बाबा का झण्डा रानी लक्ष्मी देवी राणा जी ने फैराया। सब भाई बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं

ढेनकनाल में शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर ध्वजारोहण के पश्चात भ्राता बी. महापात्रा जिला सत्र न्यायाधीश, अन्य ब्र० कु० भाई बहन शिव बाबा की याद में खड़े हैं

यह चित्र नयागंज कानपुर सेवा केन्द्र की ओर से सेन्ट्रल धर्मशाला संग्रहालय में शिवजयन्ती के उपलक्ष में हुए झंडारोहण का है । मुख्य अतिथि भ्राता रमाशंकर श्रीवास्तवा मुन्सिफ मजिस्ट्रेट तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहन खड़े हैं

वर्धा में शिवरात्रि महोत्सव पर राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए जिला अधिकारी चौबे जी । ब्र० कु० शोभा बहन साथ में खड़ी हैं

पटियाला में महाशिवरात्रि उत्सव में सम्बोधन करते हुए भ्राता सोहन लाल जसौटा, म्युन्सिपल कमिशनर, मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० शांता जी कृष्णा जी, तथा गुलजार मोहिनी जी बैठी हैं

टेम्भुर्णी (सोलापुर) में शिवरात्रि के अवसर पर आयोजित आध्यत्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं भ्राता पी. बी. डेंट (बांएं से) ब्र० कु० दिलीप, अध्यक्ष ब्र० कु० विनायक राव पाटील, ब्र० कु० सोमप्रभा तथा ब्र० कु० महानन्दा साथ में हैं

जलगांव में ४६वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती कार्यक्रम में भाषण करती हुई बहन सुमनताई पाटिल, निर्देशक जे. डी. सी. सी. बैंक तथा दूध विकास फेडरेशन जलगांव । मंच पर (बाएं से) बैठे हैं प्राध्यपिका लिलावती जैन, ब्र० कु० मीनाक्षी तथा प्रतिभा बहन

काटोल में शिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम में ब्र० कु० लता शिव बाबा का परिचय देते हुए । मंच पर नागपुर जिला परिषद के अध्यक्ष (परिवार सहित) तथा ब्र० कु० शोभा बहन बैठी हैं

शिवरात्री के महोत्सव पर कमला नेहरू नगर, गाजियाबाद में शिव दर्शन प्रदर्शनी एवं प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया

कृष्णानगर सेवा केन्द्र की ओर से रघुबरपुरा में शिवजयन्ती महोत्सव मनाया गया। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० चक्रधारी जी, कश्मीरीगेट की कन्याएं (सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए) तथा ब्र० कु० कमलमणि जी

शिवरात्री के उपलक्ष में कल्याणवास में ब्र० कु० हृदय-मोहिनी जी का खिचड़ीपुर व त्रिलोकपुरी के प्रधान स्वागत करते हुए। ब्र० कु० कमलमणि जी तथा लीला बहन साथ में हैं

शाहबाद में ए. सी. सी. सिमेन्ट फेक्टरी के प्रांगण में शिवजयन्ती के अवसर पर भ्राता कृष्णमूर्ति सह अभियन्ता अपने विचार प्रकट करते हुए। मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० प्रेम, ब्र० कु० महादेवी, विजय, रंजना, जगदेवी तथा रत्ना बैठी हैं

चित्र प्रदर्शनी देखने के पश्चात् बीच में नगर उपाध्यक्ष भ्राता बाबू काजी जी, न.पा. के लक्ष्मण अधिकारी जी, रामगोविन्द भाई व शीला बहन आदि खड़ी हैं।

काठमाण्डो (नेपाल) में शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर शिव बाबा झण्डा रानी लक्ष्मी देवी राणा जी ने फैराया। सब भाई बहन शिव बा की याद में खड़े हैं

बुमला (रांची) ट्रेनिंग स्कूल में शिव-ध्वजारोहण किया गया। उस अवसर पर वहां के प्रिन्सिपल व विद्यार्थी उप-स्थित थे

सेवाकेन्द्र की ओर से शहडोल में विश्व नव-निर्माण चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता के० सी० पारे दिखाई दे रहे हैं। साथ में एस. डी. ओ. टेलीफोन तथा ब्र० कु० सुशीला जी

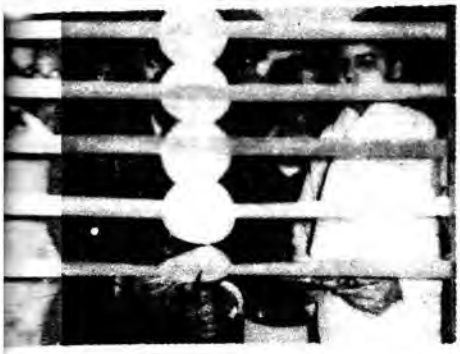

बलसार सेवा केन्द्र की ओर से धरमपुर गांव में विश्व-शान्ति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन भ्राता के० टी० भट्ट जी (कलेक्टर) ने किया। वे ब्र० कु० भाई-बहनों के साथ बाबा की याद में खड़े हैं

डाक पत्थर में आयोजित शिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम के पश्चात् ब्र० कु० प्रेम बहन तथा अन्य भाई बहन मुख्य अतिथि के साथ दिखाई दे रहे हैं

काटोल में शिवरात्रि महोत्सव कार्यक्रम में ब्र० कु० लता शिव बाबा का परिचय देते हुए । मंच पर नागपुर जिला परिषद के अध्यक्ष (परिवार सहित) तथा ब्र० कु० शोभा बहन बैठी है।

संकेश्वर में शिवरात्रि के अवसर पर ब्र.कु.बहन भ्राता बी. ए. पाटिल अध्यक्ष तथा प्रिन्सीपल को शिव बाबा का परिचय देते हुए

यह चित्र नयागंज कानपुर सेवा केन्द्र की ओर से सेन्ट्रल धर्मशाला संग्रहालय में शिवजयन्ती के उपलक्ष में हुए झंडारोहण का है । मुख्य अतिथि भ्राता रमाशंकर श्रीवास्तवा मुन्सिफ मजिस्ट्रेट तथा अन्य ब्र० कु० भाई बहन खड़े हैं

बेलगाम सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित 'शिवरात्री' महोत्सव में ब्र० कु० प्रभा परमात्मा के अवतरण पर प्रकाश डाल रही हैं, साथ में भ्राता महादेवप्पा कित्तूर जी, बी. बी. बेल्लद तथा शिवाजीराव काकत्तर बैठे हैं

ढेनकनाल में शिवरात्रि महोत्सव के अवसर पर कार्यक्रम के पश्चात भ्राता बी. महापात्रा जिला सत्र न्यायाधीश अन्य ब्र० कु० भाई बहन शिव बाबा की याद में खडे हैं।

शिवरात्री के महोत्सव पर "शिव का अवतरण कब और कैसे?" पर ब्र० कु० राज प्रवचन करते हुए

जलगांव में ४६वीं त्रिमूर्ति शिवजयन्ती कार्यक्रम में भाषण करती हुई बहन सुमनताई पाटिल, निर्देशक जे. डी. सी. सी. बैंक तथा दूध विकास फेडरेशन जलगांव। मंच पर (बाएं से) बैठे हैं प्राध्यपिका लिलावती जैन, ब्र० कु० मीनाक्षी तथा प्रतिभा बहन

मुम्बई सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में अतिथि भ्राता चुन्नीलाल जी मेहता को ब्र.कु. हंसा बहन उनको शिव बाबा का परिचय देते हुए।

होशियारपुर में शिवरात्री महोत्सव के उपलक्ष में वहां के प्रसिद्ध डा. गोयल जी, पुलिस इन्सपेक्टर तारा चन्द जी तथा ब्र० कु० सुषमा जी एवं गीता जी ध्वजारोहण कर रही हैं

शिवजयन्ती पर शिवध्वजारोहण मेजर भ्राता वखशी जी ने किया। साथ में ब्र० कु० संजीवन तथा अन्य भाई

हाथरस में "महिला जागृति सम्मेलन" में मंच पर (दांई ओर से) ब्र० कु० मनोरमा जी, डा. किरण जी, प्राचार्य डा. इन्द्रा शर्मा जी तथा भाषण करते हुए ब्र० कु० सरोज बहन जी और उन के साथ ब्र० कु० बीना जी दिखाई दे रही हैं

नई दिल्ली मालवीय नगर सेवा केन्द्र की ओर से शिवरात्री महोत्सव मनाया गया। मंच पर ब्र० कु० आशा, ब्र० कु० सुन्दरी जी दिखाई दे रही हैं। इस अवसर पर डाक्टर, इन्जिनियर, एयर फोर्स के अधिकारी इत्यादि काफी मात्रा में उपस्थित थे

पटियाला में महाशिवरात्रि उत्सव में सम्बोधन करते हुए भ्राता सोहन लाल जसौटा, म्युन्सिपल कमिशनर, मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० शांता जी, कृष्णा जी, तथा गुलजार मोहिनी जी बैठी हैं

पुरी सेवा केन्द्र पर शिवध्वजारोहण जगन्नाथ पुरी के कलेक्टर भ्राता अशोक कुमार मिश्रा जी ने किया उनके पास ब्र० कु० निरूपमा, ब्र० कु० प्रतिभा व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

गोवा सेवा केन्द्र की ओर से म्हापसा में राजयोग प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन माजी नगराध्यक्ष शाम ऐचरेकर दीप जलाकर कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० शोभा, ब्र.कु. नलिनी जी व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

यथार्थ महाबीर

ब्र० कु० श्यामा, रायबागान, कलकत्ता

भक्ति मार्ग में वर्णित महाबीर अर्थात् हनुमान की रूप-रेखा तथा कार्य-शैली आध्यात्मिक दृष्टि-कोण से सम्पूर्णतः एक अच्छे पुरुषार्थी की निशानी है। जिन्हें हम निम्नलिखि बातों से समझ सकते हैं।

जैसे हनुमान के चित्र में उनका चेहरा बन्दर-सा दिखाते हैं परन्तु शीश पर रत्नजड़ित मुकुट तथा साथ में पवित्रता का यानि प्रकाश का ताज भी दिखाते हैं। तब मन में यह प्रश्न उठता है ऐसा क्यों ? कहावत है दिल का दर्पण है चेहरा । इस कलियुग में सभी मनुष्यों का स्वभाव बन्दर समान ही है इसलिए चित्रकार ने सीरत को सूरत में दिखा दिया। लेकिन ताज है देवताओं की निशानी। इस संगमयुग में ही हनुमान ने पुरुषार्थ किया और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया, अपने मान का हनन किया इसलिये हनुमान कहलाये। अभी के पुरुषार्थ का फल यह डबल ताज है । उनकी आँखों में एकाग्रता तथा अडोलता है। फिर हाथ में गदा है—युद्ध की निशानी। ज्ञान की गदा द्वारा इन्होंने माया रावण से युद्ध किया इसलिये हमेशा उनके कंधे पर गदा रहती है। दूसरे हाथ में पर्वत दिखाते हैं जिस पर संजीवनी बूटी भी है। पर्वत को उठाना यानि जिम्मेवारी जिसका संगमयुग में अर्थ है कि हर मूर्छित आत्मा को होश में लाने की जिम्मेवारी। कहते हैं लक्ष्मण जब मूर्छित हुये तब हनुमान ने संजीवनी बूटी पिलाकर उन्हें होश में लाया। लक्ष्मण कौन ? जिनके मन का जो लक्ष्य है उसे जब भूल जाते हैं अर्थात् मूर्छित हो जाते हैं तब बाबा का परिचय और आत्मा का परिचय रूपी संजीवनी बूटी देकर उसके लक्ष्य को फिर से याद दिलाना ही उसे होश में लाना है। इस संगमयुग पर एक लक्ष्मण को ही नहीं अनेकों लक्ष्मणों को बाबा की याद से जीवन-दान दिया था।

हनुमान को एक लाल लंगोटी को छोड़ पूरा वस्त्रहीन दिखलाते हैं जिसका अर्थ है इस संगम युग में उन्होंने अशरीरी बनने का पुरुषार्थ किया था, जो वस्त्रहीन होने का प्रतीक है । लाल लंगोटी जो दिखाई है माना परमधाम अपने घर को याद करना। फिर उन्हें साथ में पूंछ भी दिखलाते हैं। वे पूजनीय हैं फिर पूंछ भी है, 'यानि इसने हमें नहीं पूछा हमारा मान नहीं किया'—जब तक इस मान-शान की पूंछ में आग नहीं लगेगी तब तक लंका दहन नहीं होगा। इसलिये हनुमान ने अपनी पूंछ में आग लगाकर लंका यानि रावण की इस दुनिया का दहन किया था। फिर देखते हैं उनके चरण जो पृथ्वी पर नहीं बल्कि तत्परता के साथ उड़ने की मुद्रा में दिखलाये जाते हैं अर्थात् इस संगमयुग में बाबा की सेवा में सदा तत्पर तथा बुद्धि उड़ान की ही इस मुद्रा का प्रतीक है।

हनुमान को बल याद दिलाना पड़ता था। उनको उनके बल की याद दिलाते ही जैसे वे बली बन कार्य करते थे इसलिये उनका नाम महाबली है, महावीर है। इस संगमयुग पर ही परमप्रिय परमात्मा आकर यह सब रहस्य समझाते हैं कि तुम सर्वशक्तिवान परमात्मा के मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मायें हो, बच्चे तुम्हीं महावीर हो। इस प्रकार तुम ही संगमयुग के महावीर पुरुषार्थी थे जिसके फलस्वरूप तुम्हें ताज मिला तथा पूजनीय बने।

□□

आध्यात्मिक सेवा समाचार

शिवरात्रि महोत्सव पर सेवा

४६वीं शिव जयन्ति का पर्व सभी सेवा केन्द्रों पर बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी जगह ध्वजारोहण, प्रवचन तथा प्रदर्शनियों द्वारा जन २ को परमपिता शिव का संदेश देने हेतु विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए, जिनका समाचार इस प्रकार है—

पटियाला सेवा केन्द्र की ओर से शिवरात्रि के उपलक्ष्य में विश्व कर्मा मंदिर में सार्वजनिक प्रोग्राम रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि म्यूनिसिपिल कमिश्नर भ्राता सोहन लाल जी थे। इसके अतिरिक्त सम्पादक सुखराज साप्ताहिक तथा पटियाला साप्ताहिक समाचार पत्र संगठन के अध्यक्ष डा० सुरजीत सिंह राज और पंजाब के प्रसिद्ध राज कवि साधुसिंह मस्ताना भी आए। समाना और नाभा केन्द्रों की ओर से भी प्रभातफेरी तथा प्रवचन, ध्वजारोहण के कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न हुए।

मोगा सेवा केन्द्र की ओर से दो दिन के लिए मानव कल्याण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे ८०० मिलट्री के जवानों, गणमान्य व्यापारियों तथा सरकारी कर्मचारियों ने लाभ उठाया। इस मास में पांच प्रमुख स्थानों पर प्रदर्शनियां की गई।

होशियारपुर सेवा केन्द्र की ओर से मुख्य बाजार में तीन दिन के लिए शिव दर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिससे आसपास के गांव वालों ने तथा शहर के बहुत से लोगों ने देख कर लाभ उठाया। प्रमुख स्थानों से प्रभात फेरी निकाली गई तथा डा० गोयल एवं जिला पुलिस इंसपैक्टर भ्राता ताराचंद जी द्वारा ध्वजारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

बांदा सेवा केन्द्र की ओर से तीन ट्रकों पर भिन्न-भिन्न चेतन झांकिया सजाकर शोभा-यात्रा निकाली गई। शिवजयन्ति के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में डी० ए० वी० कालेज के हाल में २००० लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। उद्घाटन करने हेतु बांदा के अतिरिक्त जिलाधीश भ्राता ऋषिकेशव पांडेय जी अपने ईष्ट मित्रों सहित सपरिवार पधारे।

नयागंज (कानपुर) सेवा केन्द्र की ओर से २२ फरवरी को सेंट्रल धर्मशाला में एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि नगर के मुसिफ मैजिस्ट्रेट भ्राता रमाशंकर जी थे। इसके अतिरिक्त हरदोई जनपद के विख्यात शिव मन्दिर संकट हरण सकाहा में प्रदर्शनी का आ आयोजन किया गया, जिसमें हरदोई के जिलाधीश महोदय, संसद सदस्य भ्राता धर्मराज सिंह, थानाध्यक्ष भ्राता का० योगेश चन्द्र शुक्ल आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

आगरा सेवा केंद्र की ओर से दरेसी में अचल भवन में महाशिवरात्रि समारोह भव्यतापूर्वक मनाया गया। इसके अतिरिक्त ध्वजों, बैनरों, गीतों के साथ नगरफेरी भी निकाली गई।

डाक पत्थर सेवा केंद्र की ओर से शहर के प्रमुख स्थान पर शिवरात्रि के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया जिसमें मुख्य अतिथि सिंचाई विभाग के अधिशासी अभियंता भ्राता चन्द्र कुमार अग्रवाल जी थे। इसके अतिरिक्त राजबन सीमेंट फैक्ट्री में दो दिवसीय चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

बाराबांकी सेवा केंद्र की ओर से दो दिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिससे ३००० आत्माओं ने लाभ उठाया।

बोकारो सेवा केंद्र की ओर से त्रिदिवसीय चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लायन्स क्लब के हाल

में लगाई गई जिसका उद्घाटन पब्लिक रिलेशन आफिसर भ्राता ओंकार नाथ पंचालर जी ने किया। भ्राता एम० पी० जायसवाल एस० डी० ओ० भी प्रदर्शनी देखने पधारे।

बीदर सेवा केंद्र की ओर से बीदर (कर्नाटक), उदयगिरी, अहमदपुर की जनता को जागृत किया। बीदर के प्रसिद्ध शिव मंदिर में सार्वजनिक प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि उदयगिरी में शिवाजी महाविद्यालय के प्रिंसिपल थे।

गाजियाबाद सेवा केंद्र की ओर से शिवरात्रि के उपलक्ष्य में शिवरात्रि मास मनाया गया जिसके अंतर्गत सदरपुर राजापुर आदि गांवों में हर रविवार को गांव-गांव प्रदर्शनी रखी गई। नसरतपुरा शहर में प्रवचन तथा प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम भी रखा गया। २३ फरवरी को कविनगर में फंकशन रखा गया।

अम्बाला कैंट सेवा केंद्र की ओर से सारे फरवरी मास में शहजादपुर, भुलाना, समाना एवं शाहबाद में प्रदर्शनी, प्रोजैक्टर शो व प्रवचनों के कार्यक्रम चले। २१ फरवरी को माडल टाऊन में एक नये उपसेवाकेंद्र का उद्घाटन डिप्टी डी० ओ० उमा चोपड़ा जी द्वारा सम्पन्न हुआ। इसके अतिरिक्त मिलट्री के मंदिर में तथा भुलाना के हास्पीटल में भी प्रवचनों तथा प्रदर्शनी के कार्यक्रम रखे गए।

बड़ौदा सेवा केंद्र की ओर से शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रभातफेरी निकालो गई तथा शहर के बीच सवपुरा, कुमार शाब्बा में दो दिन के लिए प्रदर्शनी रखी गई। शिवरात्रि के दिन सार्वजनिक कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डिस्ट्रीक्ट एण्ड सेशन जज भ्राता एम० के० देसाई थे। इसके अतिरिक्त तीन दिन के लिए मगनवाडी में रोजयोग शिविर रखा गया।

रानीबाग (देहली) सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ति समारोह ध्वजारोहण के साथ धूमधाम से मनाया गया तथा राजधानी इन्कलेव, कृष्ण विहार, बुद्ध विहार में विश्व नव-निर्माण अध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया, जिनसे हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया कृष्ण विहार में गीता पाठशाला भी खुल गई है।

सहारनपुर सेवा केन्द्र की ओर से प्रभात फेरी निकाली गई तथा गोपाल मंदिर के निकट शिव दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

गुड़गावां सेवा केन्द्र की ओर से १८ से २५ फरवरी तक शिवरात्रि सप्ताह मनाया गया, जिसके अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर शिवदर्शन प्रदर्शनी लगाई गई। २५ फरवरी को सेवा केन्द्र पर प्रमुख व्यक्तियों के लिए प्रवचन तथा प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया।

लोहियानगर (गाजियाबाद) सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ति पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया दो दिन के लिए मुकुन्द नगर में शिव मंदिर में 'शिवदर्शन प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया।

भटिंडा सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ति के उपलक्ष्य में दो दिन प्रभात फेरी निकाली गई तथा दो दिन के लिए सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया जिसमें भटिंडा जिला के सैशन जज भ्राता एस० एस० गुरदियाल मुख्य अतिथि थे। इनके द्वारा ही चरित्र निर्माण आध्यात्मिक म्युजियम का भी उद्घाटन कराया गया।

हरदा सेवा केन्द्र, जो डेढ़ मास से खुला है, पर भी शिव जयन्ति बड़े धूमधाम से मनाई गई तथा प्रभात फेरी निकाली गई। इस सेवा केन्द्र की ओर से डाक्टर्स तथा अन्य वी० आई० पीज की सर्विस बहुत उमंग-उल्लास से की जा रही है।

सिकन्दराबाद सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ति का पर्व बड़े उमंग-उल्लास से मनाया गया तथा सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें गीत, कविताएं तथा प्रवचनों द्वारा अनेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

जगाधरी सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में भटोली शिव मंदिर पर लगने वाले मेले

में शिव दर्शन प्रदर्शनी लगाई गई, जिससे आसपास के गांवों के लोगों ने तथा शिव भक्तों ने शिव पिता का सन्देश प्राप्त किया।

मणिनगर सेवा केन्द्र पर गीता पाठशालाओं ने सामूहिक रूप से ध्वजारोहण के साथ शिव जयन्ति मनाई तथा सेमिनार का आयोजन भी किया, जिसमें विख्यात वक्ता विद्युत भाई ठाकुर भी उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त पंचदेव के मंदिर में भी विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई।

सिरोही सेवा केन्द्र की ओर से जन २ को शिव पिता का परिचय ने हेतू १६ स्थानों पर प्रदर्शनी प्रोजैक्टर तथा प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गए। शिव जयन्ती के दिन रामझरोखा मैदान में दो दिन के लिए प्रदर्शनी का आयोजन किया गया तथा शिव शंकर की झांकी सजाई गई। मधुबन से मोहिनी बहिन द्वारा लाई गई ड्रामा पार्टी ने 'तीसरा नेत्र' नामक नाटक दिखाया तथा प्रवचन भी हुए।

बरेली सेवा केन्द्र द्वारा शिव जयन्ति के अवसर पर अलखनाथ शिव मंदिर में प्रदर्शनी लगाई गई, जिसको भक्तों ने तथा अन्य लोगों ने बहुत रुचि से देखा।

वर्धा सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती के पर्व पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी, राजयोग शिविर तथा सार्वजनिक प्रवचन के कार्यक्रम रखे गए जिनसे ५०,००० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त वर्धा जेल में हर रविवार को कैदियों को भी कोर्स दिया जाता है।

जूनागढ़ सेवा केन्द्र की ओर से गिरनार तलेटी में शिवरात्रि पर लगने वाले मेले में, मिनी आध्यात्मिक मेला लगाया गया जिससे लाखों की संख्या में लोगों ने लाभ प्राप्त किया। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक कार्यक्रम भी रखा गया, जिसमें गिरनार साधना आश्रम के आचार्य भी पधारे।

ककोड़ सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ती ध्वजारोहण सहित बड़े उत्साह के साथ मनाई गई तथा दूसरे दिन सार्वजनिक प्रवचन का कार्यक्रम भी रखा। इसके अतिरिक्त सिकन्दराबाद तथा दादरी सेवा केन्द्रों पर भी झांकियां सजाई तथा ध्वजारोहण किया गया।

रोपड़ सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ती पर रंगीलपुर गांव में प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया। थर्मल कालोनी में प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मेरठ सेवा केन्द्र की ओर से मुख्य स्थान पर प्रदर्शनी, राजयोग शिविर तथा प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें गायत्री मोदी, प्रसिद्ध वकील भ्राता गजराज सिंह तथा व्यापार संघ के सचिव भ्राता हरिदत्त जी शामिल हुए।

मोदीनगर सेवा केन्द्र की ओर से शिव रात्रि के अवसर पर वकील बारात घर में गीता रहस्य प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविर का कार्यक्रम रखा गया, इस कार्यक्रम में बच्चों ने भी मनोरंजक कार्यक्रम किया, इसके अतिरिक्त शान्ति निकेतन स्कूल के वार्षिक उत्सव पर उपस्थित अध्यापक एवं छात्रगण को परमपिता शिव का संदेश दिया गया।

गोरखपुर सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती के उपलक्ष्य में दो दिवसीय राजयोग आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। आकाशवाणी गोरखपुर ने 'शिव स्वागत आज तुम्हारा' गीत भी प्रसारित किया।

कपूरथला सेवा केन्द्र की ओर से २६ फरवरी से ४ मार्च तक स्थानीय शालीमार बाग में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक मेले का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन भ्राता एस० सी० अग्रवाल आई० ए० एस० अतिरिक्त जिलाधीश, कपूरथला ने किया। चेतन देवियों की झांकी भी सजाई गई तथा राजयोग शिविरों का भी आयोजन किया गया। सहस्त्रों लोगों ने मेले को देख कर लाभ उठाया।

सतना सेवा केन्द्र की ओर से रीवा में त्रिदिवसीय आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन स्थानीय सिविल सर्जन भ्राता जे० पी० तिवारी ने किया। इसके अतिरिक्त मैहर, रीवा अमरपाटन चारों स्थानों पर "महाशिवरात्रि आध्यात्मिक सम्मेलन" भी रखा गया।

अंजार सेवा केन्द्र पर शिवजयन्ति का त्योहार बड़ा धूमधाम से मनाया गया। गांधी धाम सेवा-केन्द्र पर मैजिस्ट्रेट भ्राता शशिकांत जी के हाथों द्वारा शिव बाबा का झंडा लहराया गया तथा सायं को अंजार सेवाकेन्द्र पर सार्वजनिक प्रवचन कार्यक्रम भी रखा गया।

कटनी सेवा केन्द्र की ओर से शहडौल में विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन वहां के जिला एवं सत्र न्यायाधीश भ्राता के० सी० पारे जी ने किया। राजयोग शिविर तथा प्रवचनों के कार्यक्रम भी चले।

फरीदकोट सेवा केन्द्र की ओर से शिवरात्रि के उपलक्ष्य में तलवंडी गीता पाठशाला में सार्वजनिक कार्यक्रम हुआ, शिवरात्रि के दिन फरीदकोट के सैशन जज भ्राता पी० सी० सिंगल परिवार सहित म्यूजियम देखने आए। रात्रि को बी० एस० एफ० के डी आई० जी० ने ब्र० कु० बहिनों को भाषण देने हेतु बुलाया, जिसे सभी जवानों ने ध्यानपूर्वक सुना।

धरान सेवा केन्द्र की ओर से तीन दिन की आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। शिवरात्रि के दिन सायं को एक बड़े हाल में, प्रोग्राम रखा गया,

सोनीपत सेवा केन्द्र की ओर से एक स्कूल में २ दिन की आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, जिसका उद्घाटन जेल सुपरिटैंडेन्ट से कराया गया।

हिम्मत नगर के म्यूजियम का उद्घाटन १४ फरवरी को आदरणीय दादी जी के हाथों सम्पन्न हुआ। शिवरात्रि के दिन ७००० आत्माओं ने म्युजियम के द्वारा शिव बाबा का संदेश प्राप्त किया। सेवा केन्द्र की ओर से कच्छ मांडवी में प्रदर्शनी, शोभा यात्रा राजयोग शिविर तथा प्रवचन के कार्यक्रमों से हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया।

खेडब्रह्मा सेवा केन्द्र द्वारा वसाड़ और बड़ौली गांवों में विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी, झांकी तथा प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, इसके अतिरिक्त पी० टी० सी० कालेज तथा इडर में भी आध्यात्मिक प्रवचन किए गए।

भोडासा सेवा केन्द्र की ओर से शिवजयन्ति के अवसर पर ध्वजारोहण तथा सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त महादेव मंदिर पर लगने वाले मेले में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई।

पणजी (गोआ) सेवा केन्द्र की ओर से मालवण में ४ दिन के लिए प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त प्रोजेक्टर शो भी दिखाया गया। रेडियो तथा समाचार-पत्रों में भी "शिवरात्रि रहस्य" प्रसारित किया गया।

बिलासपुर सेवा केन्द्र की ओर से शिवजयन्ति के शुभ अवसर पर एक सार्वजनिक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें "आध्यात्मिकता द्वारा विश्व एकता" विषय पर प्रवचन दिया गया। भ्राता वी० जे वराड़पांडे जी, चीफ जुडिशियल मैजिस्ट्रेट तथा कई अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित हुए।

रांची सेवा केन्द्र की ओर से शिव मंदिर एवं राम मन्दिर स्थानों पर विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिनसे १४००० आत्माओं को लाभ प्राप्त हुआ। रांची आकाशवाणी केन्द्र से तथा दैनिक समाचार पत्रों में भी "शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य" प्रसारित किया गया।

बलसार सेवा केन्द्र की ओर से धर्मपुर गांव में एक विश्व शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। शिवरात्रि के अवसर पर शिव मन्दिर तथा स्कूल में प्रवचन भी किए गए।

पुरी सेवा केन्द्र पर पुरी के डी० एम० तथा कलैक्टर भ्राता ऐ० के० मिश्रा जी द्वारा ध्वजारोहण कराया गया। इसके अतिरिक्त एक प्रदर्शनी भी लगाई जिसे अनेक आत्माओं ने देखा।

भंडारा उपसेवा केन्द्र द्वारा कुंजली गांव में दो दिन के लिए विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिससे हजारों आत्माओं को शिव पिता का संदेश प्राप्त हुआ।

चन्द्रपुर सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ति के

उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें शिव और शंकर में महान अंतर को झांकी द्वारा स्पष्ट किया गया। इसके अतिरिक्त 'मार्कंडादेव' नामक स्थान पर प्रवचन द्वारा ४००० शिव भक्तों को शिव बाबा का संदेश दिया गया। अमकेर नामक स्कूल में भी दो दिन की प्रदर्शनी रखी गई।

सूरत सेवा केन्द्र से सम्बंधित सभी गीता पाठशालाओं के गांवों—मांडयी, कढौद, बारडोली, वराड़, व्यारा, उकाई, कठोर और वराछा में पब्लिक प्रोग्राम रखे गए तथा साकार बाबा की स्लाइड्स भी दिखाई गर्ग। शिवरात्रि के दिन 'रंग उपवन' थियेटर में सार्वजनिक प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। शहर में शोभा यात्रा भी निकाली गई।

तिनसुखिया सेवाकेन्द्र की ओर से डिगबोई के 'नामघर' में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया। शिवरात्रि के दिन शहर में प्रभात फेरी निकाली गई तथा ध्वजारोहण के साथ यह त्योहार धूमधाम से मनाया गया। 'शिवधाम' में 'राजयोग विश्व शांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया।

मुजफ्फर नगर सेवा केन्द्र की ओर से अग्रवाल पेपर मिल में, कुकड़ा तथा मखियाली गांवों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में पीस लाइब्रेरी में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया।

गोहाटी सेवाकेन्द्र को 'विश्व हिंदू सम्मेलन' द्वारा "भारत गौरव चित्र प्रदर्शनी" में स्टाल लगाने का निमंत्रण मिला, जिसके परिणामस्वरूप ५ दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी को १२००० डेलिगेट्स तथा लाखों की संख्या में आम जनता ने देखा।

गोंदिया सेवा केन्द्र को ओर से तीन दिन के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि भ्राता एस० जे० गडमडे (जुडिशियल मैजिस्ट्रेट), भ्राता वाई० डी० बागड़े (जुडिशियल मैजिस्ट्रेट) थे।

सम्बलपुर सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती के अवसर पर २ दिन के लिए शिव मन्दिर के पास स्कूल में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई, तीन दिन के लिए योग शिविर भी रखा गया जिसमें कई आत्माओं ने योग का अभ्यास किया। शिव जयन्ति का त्योहार ध्वजारोहण के साथ उमंग-उल्लास से मनाया गया। सार्वजनिक कार्यक्रम तथा प्रैस कॉन्फ्रैंस के भी बहुत आकर्षक कार्यक्रम रखे गए।

जयपुर सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ति के उपलक्ष्य में गुरुनानक वन संस्थान आदर्शनगर के हाल में सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया, जिसके मुख्य अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के जस्टिस गुमान मल लोढा जी थे।

सोलापुर सेवाकेन्द्र पर शिवजयन्ति के दिन ध्वजारोहण किया गया तथा सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें गीतों-प्रवचनों का कार्यक्रम चला। कई प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित हुए। कुर्डूवाडी उपसेवा केन्द्र पर भी सार्वजनिक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जिसको देखने के लिए सोलापुर, टेभूर्णी, पंढरपुर, मंगलवेड़ा आदि स्थानों से भाई बहिन उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त मंगलवेड़ा उपसेवा केन्द्र पर भी सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया 'राजयोग' तथा आनन्द' फिलम भी दिखाई गई। टेभूर्णी नामक गांव में चार दिन के लिए आध्यामिक प्रदर्शनी एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया।

साउथ-एक्सटेंशन (दिल्ली) सेवा केन्द्र पर शिवरात्रि के अवसर पर 'सर्व धर्म विश्व शान्ति सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पधारे हुए बौद्धियों के प्रमुख लामा, जामिया-मिलिया कालेज के प्रोफैसर मुसलमान भाई, इसाई धर्म से फादर मोतीलाल तथा सिक्ख धर्म से आए हुए जनरल उबैन ने प्रवचनों में अपने-अपने विचार रखे तथा कहा कि हम सब आपस में भाई-भाई होकर प्रेम से रहें और दयाभाव रखें। कार्यक्रम के अंत में

ब्रह्मा कुमारी बहनों ने भी शिव परमात्मा का सन्देश सर्व धर्म की आत्माओं के प्रति सुनाया।

जनकपुरी (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ती के अवसर पर 'शिव और शंकर में अंतर' की झांकी सजाई गई तथा प्रदर्शनी लगाई गई, इसके अतिरिक्त तीन स्थानों पर प्रवचन भी रखे गए।

शाहदरा (दिल्ली) सेवा केन्द्र पर शिव जयन्ति का पर्व ध्वजारोहण के साथ बड़े धूमधाम से मनाया गया। आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं सार्वजनिक सभा का भी आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त खजूरी नन्दनगरी, भजनपुरा, नवीन शाहदरा, रोहताश नगर आदि स्थानों पर ध्वजारोहण तथा प्रवचनों के विभिन्न कार्यक्रम रखे गए।

त्रिनगर (दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से शिव जयन्ति के अवसर पर तीन दिन के लिए शिवप्रदर्शनी लगाई गई, जिसमें भक्तों की भीड़ लग गई।

भीलवाड़ा सेवा केन्द्र की ओर से शिवजयन्ति के उपलक्ष्य में एक आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि जिला शिक्षा अधिकारी भ्राता कनकमल जैन आए थे। सभी संस्थाओं के हैडस भी आए। इसके अतिरिक्त ५ दिन के लिए युग परिवर्तन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

पलवल सेवा केन्द्र की ओर से शिवदर्शन प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, सायं को एक सार्वजनिक सभा का कार्यक्रम रखा गया।

इटारसी सेवा केन्द्र की ओर से हरदा तथा वैल्लू नगरों में आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा राजयोग शिविरों के आयोजन किए गए, जिनमें मुख्य अतिथि क्रमशः भ्राता एस० के० जैन० न्यायाधीश प्रथम श्रेणी एवं भ्राता एच० एस० परिहार मंडल वन-विभाग अधिकारी थे।

जलगांव सेवा केन्द्र की ओर से शिवरात्रि के उपलक्ष्य में एक सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें 'महाशिवरात्रि का वास्तविक रहस्य' तथा 'नारी उत्थान' विषयों पर प्रवचन हुए।

चंडीगढ़ सेवा केन्द्र तथा इससे सम्बन्धित सभी सेवा केन्द्रों द्वारा शिवजयन्ति का पर्व बड़े धूमधाम से मनाया गया। १८ फरवरी से २२ फरवरी तक एक सप्ताह में चंडीगढ़ के विभिन्न स्थानों पर, मोहाली तथा कसौली में आध्यात्मिक प्रवचन, दिव्य गीत एवं कविता तथा नाटकों के कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए जिनसे सारे शहर में आध्यात्मिकता की लहर छा गई। सभी सेवा केन्द्रों पर प्रभात फेरियां भी निकाली गईं। कार्यक्रमों की सूचना एवं समाचार दैनिक समाचार पत्रों में भी प्रकाशित किया गया।

इंदौर सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि २० फरवरी को 'दीदी जी' के यहाँ पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। यहां उन्होंने सुल्याखेड़ी गीता पाठशाला, देवास, उज्जैन तथा महू सेवा केन्द्रों का भ्रमण किया, जहां पर 'आध्यात्मिक सम्मेलन' रखे गए। शिवरात्रि के दिन केक काट कर 'दीदी जी' ने इंदौर सेकाकेन्द्र का तेरहवां जन्म दिन मनाया, ध्वजारोहण किया गया तथा सायं को एक सार्वजनिक कार्यक्रम 'अन्तर्राष्ट्रीय पर्व महाविशरात्रि उत्सव' के रूप में रखा गया, जिसमें प्रवचनों तथा नाटक से अनेकानेक आत्माएं बहुत प्रभावित हुईं।

नागपुर सेवा केन्द्र पर जानकी दादी के आगमन पर इडस हाई स्कूल में एक सार्वजनिक फंकशन रखा गया, जिसमें मुख्य अतिथि भ्राता अशोक देसाई जी थे। इस अवसर पर एक विशाल शोभा यात्रा भी निकाली गई तथा प्रैस कान्फ्रैंस और विशिष्ट व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया। इसी प्रकार दादी मनोहरइन्द्रा जी के आगमन पर बार-रूम में १०० हाइकोर्ट के वकीलों के बीच प्रवचन दिया गया। दूसरा प्रवचन नेशनल फायर कालेज में रखा गया। इसके अतिरिक्त शिवजयन्ती के अवसर पर तीन दिन की प्रदर्शनी लगाई गई, तथा सायं को पब्लिक प्रोग्राम रखा गया। सोने गाँव के शिवमंदिर में भी प्रदर्शनी लगाई गई।

जीन्द सेवा केन्द्र की आधारशिला स्थानीय

स्वशासन मन्त्री मांगेराम गुप्ता द्वारा रखी गई। इस समारोह में शहर के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति भी उपस्थित हुए। उन्होंने भाषण में कहा कि यह संस्था मानव कल्याण के अर्थ बहुत उत्तम सेवा कर रही है।

महू (म० प्र०) सेवा केन्द्र की ओर से फरवरी मास में 'सर्व धर्म सम्मेलन' का आयोजन किया गया जिसका विषय था विश्व बंधुत्व एवं आध्यात्मिकता। सम्मेलन की मुख्य अतिथि न्यूयार्क स्थित सेवा केन्द्रों की प्रशासिका ब्र० कु० मोहिनी बहिन थी। पारसी धर्म के प्रवक्ता भ्राता शापुर जी दस्तुर जी, सिक्ख धर्म के भ्राता हरबन्स सिंह छाबड़ा एवं इंदौर जोन से ब्र० कु० किरण ने ऊपर लिखित विषय पर अपने-अपने विचार प्रकट किए। श्रोताओं में सभी वर्गों के लोग तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। कार्यक्रम का समाचार दैनिक समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया।

काठमंडू सेवा केन्द्र पर शिवजयन्ति का पर्व बड़े धूमधामसे मनाया गया। इस अवसर पर भक्तपुर शहर में, खैरा नीटोर, मल्टीखान तथा पशुपतिनाथ मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई और प्रवचनों के कार्यक्रम रखे गए।

नासिक सेवा केन्द्र की ओर से महात्मा गांधी प्रदर्शन चैरिटेबल ट्रस्ट, कोपर गांव के निमंत्रण पर २१ फरवरी से २६ फरवरी तक महात्मा गांधी म्यूनिसिपिल गार्डन में प्रदर्शनी के १२ स्टाल लगाए गए, जिनसे लगभग २ लाख आत्माओं को शिव बाबा का परिचय मिला। इसके साथ राजयोग तथा ज्ञान शिविरों का भी आयोजन किया। आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा ब्रह्मा बाबा की जीवनी से सम्बन्धित स्लाइड्स भी १० मुख्य स्थानों पर दिखाई गई।

बरीपदा सेवा केन्द्र तथा इससे सम्बन्धित सभी गीता पाठशालाओं के भाई-बहिनों ने मिलकर ४६वीं शिवजयन्ति बड़े धूमधाम से मनाई। ध्वजारोहण समारोह भ्राता धिरेन्द्र नाथ पाथी द्वारा सम्पन्न हुआ, इनके अतिरिक्त २५ अन्य वी० आई० पीज भी उपस्थित हुए। सभी अतिथियों को प्रदर्शनी द्वारा आध्यात्मिक ज्ञान दिया गया तथा शिवरात्रि का रहस्य स्पष्ट किया गया।

कटक सेवा केन्द्र पर आदरणीय दीदी जी के पहुंचने पर वी० आई० पीज का स्नेह मिलन रखा गया, जिसमें समाचार पत्रों के संवाददाता, प्रोफैसर्स पुलिस के इंसपैक्टर जनरल भ्राता पाथी जी उपस्थित हुए। शिवरात्रि के उपलक्ष्य में जटनी उपसेवा केन्द्र पर दो दिन की प्रदर्शनी लगाई गई जिनसे लगभग २,००० आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त बिरी वाटी में प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया।

अमृतसर में आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन दीदी मनमोहिनी जी, ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी तथा भ्राता सरदार सिंह, डिप्टी कमिश्नर द्वारा सम्पन्न हुआ। योग शिविर तथा देवियों के मण्डप भी लगाए गए थे। हज़ारों लोगों ने इस मेले को देखकर आध्यात्मिक लाभ उठाया।

□

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश प्रकाशक, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली ने चोपड़ा प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (E)—70